MAHILA MAHAVIDYALAYA

AMRAVATI

Opp.SBI Main Branch, Jog Chowk, Amravati.
Telephone: 0721-2571115
E-mail: mahilamahavidyalaya.amt@gmail.com website: www.mmv.ac.in

AQAR ACADEMIC SESSION 2022-2023

Criterion III

3.3.3: Number of books and chapters in edited volumes/books published and papers published in national/ international conference proceedings per teacher during last five years

Related Documents

Submitted to

THE NATIONAL ASSESSMENT AND ACCREDITATION COUNCIL

कहत कबीर

सम्पादक

डॉ. मधु रानी शुक्ला

सह-सम्पादक

डॉ. मनीष कुमार मिश्रा

शाम्भवी शुक्ला

Scanned with OKEN Scanner

कहत कबीर

सम्पादक

डॉ. मधु रानी शुक्ला

सह-सम्पादक

डॉ. मनीष कुमार मिश्रा

शाम्भवी शुक्ला

आर. के. पब्लिकेशन

मुंबई

Scanned with OKEN Scanner

ISBN : 978-93-91458-48-5

Copyright © Reserved

प्रथम संस्करण : 2022

मूल्य : ₹ 795/-

शीर्षक	Title
कहत कबीर	**Kahat Kabeer**
सम्पादक	**Editor**
डॉ. मधु रानी शुक्ला	Dr. Madhu Rani Shukla
सह-सम्पादक	**Sub-Editor**
डॉ. मनीष कुमार मिश्रा	Dr. Manish Kumar Mishra
शाम्भवी शुक्ला	Shambhavi Shukla
प्रकाशक	Publisher
आर.के. पब्लिकेशन	**R. K. Publication**
1/12, पारस दूबे सोसायटी,	1/12, Paras Dubey Society,
ओवरी पाढ़ा, एस.वी.रोड,	Ovari Pada, S. V. Road,
दहिसर (पूर्व),	Dahisar-East,
मुम्बई - 400 068	Mumbai - 400068

Phone : 9022 521190 / 9821251190

E-mail : publicationrk@gmail.com

WeWite : www.rkpublication.in

अक्षर संयोजन : राजेन्द्र मिश्र

virar.mishra63@gmail.com

आवरण : अनिरूद्ध शर्मा

मुद्रक : सुमन ग्राफिक्स, मुम्बई - 400011

Scanned with OKEN Scanner

अनुक्रम

1. लोक में रमे संत कबीर
   - डॉ. विद्या बिन्दु सिंह 09

2. कबीर का मानवीय चिंतन
   - प्रो. मृदुला शुक्ल 16

3. कबीर की समकालीन प्रासंगिकता - एक अध्ययन
   - डॉ. स्नेहाशीष दास 22

4. निर्गुण काव्यधारा के संतों का सामाजिक दर्शन (कबीर के संदर्भ में)
   - डॉ. (श्रीमती) दीपमाला मिश्रा 27

5. कबीर के राम
   - डॉ. ज्योति विश्वकर्मा 32

6. कबीर काव्य में दलित चिंतन
   - कु. प्रियंका, डॉ. अधीर कुमार 39

7. कबीर की भाषा
   - मीनू रानी 46

8. कबीरदास जी के सिद्धांत : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन
   - प्रियंका सहवाल 54

9. कबीर साहित्य की प्रामाणिकता
   - डॉ. रश्मि गुप्ता 59

10. कबीर की भाषा
    - डॉ. साधना मोहोड 63

11. कबीर की साहित्यिक रचनाएं : बीजक के विशेष संदर्भ में
    - संदीप कौर 68

Scanned with OKEN Scanner

12. कबीर-काव्य की भाषागत विवेचना
- सिद्धार्थ चैटर्जी, मनप्रीत कौर 77

13. कबीर : विचित्र निर्गुण कवि
- विनय प्रकाश सती 85

14. जनचेतना और कबीर
- कु. दीक्षा गो. तंतरपाळे, प्रो. स्नेहाशीषदास 92

15. कबीर : समाज सुधारक दृष्टिकोण
- हेबा सईद 98

16. कबीर का नारी दर्शन
- डॉ. हेमा कुमारी 101

17. कबीर का मानवीय, आध्यात्मिक एवं साहित्यिक चिंतन
- इंद्रेश कुमार मिश्र 108

18. समसामयिक परिप्रेक्ष्य में संत कबीर
- डॉ. सुरेन्द्र राम 114

19. भारतीय मूल्यों के परिप्रेक्ष्य में कबीर
- कंचन लता गंगवार, डॉ. रानी अग्रवाल 121

20. कबीर का रहस्यवाद
- कात्यायनी कुमारी 126

21. समाज सुधारक के रूप में कबीर
- डॉ. खुशबू 135

22. कबीर का सामाजिक दर्शन
- महिमा भारती 141

23. कबीरदास का समाज दर्शन
- डॉ. ममता यादव 147

Scanned with OKEN Scanner

24. समाज सुधारक कबीर
- मंजू चौरसिया 155

25. कबीर और यथार्थवाद
- डॉ. नलिनी सिंह 163

26. कबीर की समकालीन प्रासंगिकता
- प्रो.डॉ. नीलम महतो 169

27. कबीरदास की सामाजिक चेतना - एक अध्ययन
- कु. रुद्रप्रिया आस्टनकर, प्रो. स्नेहाशीषदास 177

28. भारतीय दर्शन और कबीर
- संगीता कुमारी 186

29. कबीर और पर्यावरण
- सोनिका कुमारी 194

30. Spiritual Thoughts of Kabir
- **Anu Saxena** 200

31. Kabir and His Relevance in Contemporary China
- **Ashutosh Kumar** 209

32. Social Consciousnses and Kabir
- **Preeti Singh** 221

33. Kabir As A Social Reformer
- **Dr. Rajshree Naidu** 230

Scanned with OKEN Scanner

कबीर की समकालीन प्रासंगिकता

- डॉ. स्नेहाशीष दास

कबीर के विचार हर काल में प्रासंगिक हैं, इसलिये इनकी रचनाओं को किसी काल या युग विशेष में बाँधने की बाध्यता बिल्कुल भी नहीं हैं। इनके दोहों को आप आज भी बिल्कुल सटीक पाएंगे क्योंकि वे दोहे सामाजिक, व्यवहारिक दृष्टिकोण से आज भी उतने ही प्रासंगिक हैं। हर काल में आपको ऐसे उदाहरण मिल जायेंगे जहाँ आप इन विचारों को हू-ब-हू प्रस्तुत कर सकते हैं, आज की पीढ़ी के लिए यह जानना आवश्यक हैं कि कबीर जैसे युगपुरुष हमें क्या दे गए हैं और क्यों हमें उनके विचारों की विरासत सम्भालना चाहिए।

कबीर कवि, संत या विचारक नहीं बल्कि स्वयं कालजयी विचार हैं। कबीर के लिए भूतकाल को इंगित करने वाली शब्दावली का उपयोग करने का अर्थ वर्तमान युग में उनकी प्रासंगिकता को नकारना है। चूंकि कबीर एक युग हैं और युग बीतता है पर अपने निशान छोड़ जाता हैं, उसी तरह कबीर जीवित हैं अपने प्रासंगिक विचारों के साथ। कबीरदास जी के दोहों की प्रासंगिकता पर कुछ भी लिखने से पहले उनका जीवन परिचय संक्षेप में जानना जरूरी हैं।

कबीरदास के जन्म के संबंध में अनेक किवदन्तियाँ हैं। कबीरपंथियों की मान्यता है कि कबीर का जन्म काशी में लहरतारा तालाब में उत्पन्न कमल के मनोहर पुष्प के ऊपर बालक के रूप में हुआ। कुछ लोगों का कहना है कि वे जन्म से मुसलमान थे और युवावस्था में स्वामी रामानन्द के प्रभाव से उन्हें हिंदू धर्म की बातें मालूम हुई। एक दिन, एक पहर रात रहते ही कबीर पंचगंगा घाट की सीढ़ियों पर गिर पड़े। रामानन्द जी गंगा स्नान करने के लिये सीढ़ियाँ उतर रहे थे कि तभी उनका पैर कबीर के शरीर पर पड़ गया। उनके मुख से तत्काल 'राम-राम' शब्द निकल पड़ा। उसी राम को कबीर ने दीक्षा-मंत्र मान लिया और रामानन्द जी को अपना गुरु स्वीकार कर लिया। कबीर के ही शब्दों में-

Scanned with OKEN Scanner

हम कासी में प्रकट भये हैं, रामानन्द चेताये।

कबीरपंथियों में इनके जन्म के विषय में यह पद्य प्रसिद्ध है-

चौदह सौ पचपन साल गए, चन्द्रवार एक ठाठ ठए।
जेठ सुदी बरसायत को पूरनमासी तिथि प्रगट भए
घन गरजें दामिनि दमके बूँदे बरषें झर लाग गए।
लहर तलाब में कमल खिले तहँ कबीर भानु प्रगट भए।

कबीरदास जी ने दो-दो पंक्तियों के दोहों के माध्यम से जो जीवन दर्शन प्रस्तुत किया वह हर काल, हर देश, हर वातावरण, हर युग, हर परम्परा में समसामयिक है। स्पष्ट किया है कि समाज की कुरीतियों, आडम्बर और अंधविश्वास से दूर रहें, एकेश्वरवाद को मानें, मूर्तिवाद से दूर रहें। कुछ दोहे उदाहरणार्थ प्रस्तुत हैं, जिसमें कबीरदास जी के द्वारा दिखाया गया जीवन दर्शन स्पष्ट है।

दुःख में सुमिरन सब करे, सुख में करे न कोय।
जो सुख में सुमिरन करे, दुख कहे को होय।।

कबीरदास जी कहते हैं कि दुःख में तो परमात्मा को सभी याद करते हैं लेकिन सुख में कोई याद नहीं करता। जो इसे सुख में याद करे तो फिर दुःख ही क्यों हो?

तिनके कबहूँ ना निंदिये, जो पाँव तले होय।
कबहूँ उड़ आँखों में पड़े, पीर घनेरी होय।।

तिनका को भी छोटा नहीं समझना चाहिए चाहे वो आपके पाँव तले ही क्यूँ न हो क्योंकि यदि वह उड़कर आपकी आँखों में चला जाए तो बहुत तकलीफ देता हैं।

माला फेरत जुग भया, फिरा न मन का फेर।
कर का मन का डार दें, मन का मनका फेर।।

कबीरदास जी कहते हैं कि माला फेरते-फेरते युग बीत गया तब भी मन का कपट दूर नहीं हुआ है। हे मनुष्य! हाथ का मनका छोड़ दे और अपने मन रूपी मनके को फेर, अर्थात् मन का सुधार कर।

Scanned with OKEN Scanner

गुरु गोविंद दोउ खड़े, काके लागूं पाँय।
बलिहारी गुरु आपनो, गोविन्द दियो बताय।।

गुरु और भगवान दोनों मेरे सामने खड़े हैं मैं किसके पाँव पड़ूँ? क्योंकि दोनों ही मेरे लिए समान हैं। कबीर जी कहते हैं कि यह तो गुरु की ही बलिहारी है, जिन्होंने हमें परमात्मा की ओर इशारा कर के मुझे गोविंद (ईश्वर) के कृपा का पात्र बनाया ।

कबीर माला मनहिं कि, और संसारी भीख ।
माला फेरे हरि मिले, गले रहट के देख।।

कबीरदास ने कहा है कि माला तो मन की होती हैं बाकी तो सब लोक दिखावा है। अगर माला फेरने से ईश्वर मिलता हो तो रहट के गले को देख, कितनी बार माला फिरती है । मन की माला फेरने से ही परमात्मा को प्राप्त किया जा सकता है।

इसी सम-सामयिकता के कारण कबीरदास जी को समाज सुधारक के रूप में भी मान्यता प्राप्त है, उन्होंने मनुष्य समाज में चल रहे अनेक आडम्बरों तथा कुरीतियों तथा भक्ति मार्ग में अनेक नियमों का खंडन किया है।

उनके जीवन और धर्म के विषय में अनेक वैचारिक विसंगतियों की वजह से ही उन्होंने हमेशा धर्मांधता का विरोध किया और ये सभी बातें हर युग में सम-सामयिक हैं।

कबीरदास जी को धर्म प्रचारक भी कहा जाता है, उन्होंने धर्म की एक ऐसी नींव रखी, जो आज भी कोई असत्य साबित नहीं कर सकता है। कबीर ने मूर्ति पूजा का भी बहुत विरोध किया है। उनका मानना था कि मूर्ति की पूजा करके नहीं बल्कि ज्ञान तत्व को जानकर प्राप्त होते हैं।

उन्होंने अवतारवाद का हमेशा ही खंडन किया। अवतारवाद को स्वीकार कर लेने के फलस्वरूप सगुण साधना को एक साकार आलम्बन मिल जाता है, जिसके कारण उसे सामान्य अशिक्षित व्यक्ति भी सहज ही स्वीकार कर सकता है। निर्गुण साधना का आलम्बन निराकार है, फलस्वरूप

Scanned with OKEN Scanner

वह जन साधारण के लिए ग्राह्य नहीं हो सकती। सामाजिक उपयोगिता की दृष्टि से सगुण साधना-निर्गुण साधना की अपेक्षा कहीं अधिक महत्वपूर्ण है। किंतु इस आधार पर निर्गुण साधना की सत्ता या महत्व के विषय में संदेह नहीं किया जा सकता।

हालांकि यह सत्य हैं कि सगुण साधना में आस्था रखने वाले साधकों ने निर्गुण साधना को लेकर तरह-तरह की शंकाएं उठायी हैं। उनका मूल तर्क है कि निर्गुण ब्रह्मज्ञान का विषय तो हो सकता हैं किंतु भक्ति साधना का नहीं, क्योंकि साधना तो किसी साकार मूर्त और विशिष्ट के प्रति ही उन्मुख हो सकती है। सामान्य जनता का विश्वास और आचरण भी इसी तर्क की पुष्टि करता दिखाई देता है।

साधना के व्यक्तित्व स्वरूप के संबंध में कहें तो 'स्नेहपूर्वक ध्यान ही साधना है' तो दूसरी ओर यदि स्नेहपूर्वक ध्यान ही साधना है तो फिर निर्गुण की साधना में स्नेहपूर्वक ध्यान क्यूँ नहीं किया जा सकता? सामान्य रूप से यह माना जाता है कि निर्गुण साधना का संबंध ज्ञान मार्ग के साथ है और सगुण साधना का भक्ति के साथ। इसलिए जब कोई निर्गुण साधना की बात करता है तो जन समुदाय का ध्यान नैसर्गिक रूप से ज्ञान-मार्ग की ओर जाता हैं, भक्ति मार्ग की ओर नहीं और इस प्रकार सगुण ब्रह्म का उल्लेख करते ही भक्ति मार्ग अपनी समग्र पूजा-विधि के साथ उपस्थित हो जाता है। इसका एक परिणाम यह भी हुआ कि भक्ति और पूजा-अर्चना अभेद माने जाने लगे। मंदिरों में जाना, भगवान पर दीप, अर्घ्य आदि चढ़ाना, मूर्ति की सेवा करना और उसकी आरती आदि उतारना साधना के अभिन्न अंग माने जाने लगे। वस्तुतः निर्गुण-सगुण साधना में उसकी अनुभूति में बुनियादी समानता पाई जाती है।

यदि ब्रह्म के साकार और निराकार रूपों में गुणों की समानता है और साधना-पद्धति में इन समान गुणों की स्वीकृति भी हो जाती है, तो निर्गुण की साधना को स्वीकार करने में कोई आपत्ति नहीं हो सकती। जिस प्रकार सगुण साधना के लिए निर्गुण की स्वीकृति आवश्यक है, उसी प्रकार निर्गुण साधना के लिए सगुण की स्वीकृति अनिवार्य है। ब्रह्म के दो

Scanned with OKEN Scanner

रूप विद्यमान हैं सगुण और निर्गुण। सगुण रूप की अपेक्षा निर्गुण दुर्लभ हैं। आज के परिप्रेक्ष्य में देखें तो न केवल निर्गुण धारा का विचार बल्कि हर दोहे के जो अर्थ निकलकर आते हैं, वे आज की सामाजिक कुरीतियों, असहिष्णुता, आडम्बर के लिए एक सीख हैं ये दोहे। हर काल में इनका अर्थ उस देश काल वातावरण पर लागू होता है और होता रहेगा। कबीर अनन्त हैं, अक्षुण्ण हैं, उनके विचार अनश्वर हैं।

प्रोफेसर एवं संगीत विभागाध्यक्ष,
महिला महाविद्यालय, अमरावती, महाराष्ट्र

संदर्भ सूची

1. मंजुश्री जैन (1995), फिलोसोफी एंड कबीर : अ कॉमप्यारेटिव स्टडी, दिल्ली, आदित्य प्रकाशन
2. नलिनी, हर्षे (2017) कबीरवाणी, औरंगाबाद, साकेत प्रकाशन
3. स. ह. जोशी, 1008 कबीरवाणी ज्ञानामृत, पुणे, राजेश प्रकाशन
4 सरश्री, तेजपारखी (2019) संत कबीर जीवन – चरित्र आणि कबीरवाणी, पुणे, सकाळ मीडिया प्रा. लि.

❖❋❖

Scanned with OKEN Scanner

ISSN 2454-1974

THE RUBRICS

e Journal of Interdisciplinary Studies

International, Peer Reviewed, Indexed

One Day National Multidisciplinary Conference On

Current Issues in Higher Education and Women's Contribution

10th March 2023

CIHEWC 2023

Conference Proceeding: Special Issue Editors

Ms.Priyanka Ruikar, Dr. Manoj Bhagat
Dr. Pritee Thakare, Dr. Shrikant Rasekar

Organized by

SGBAU Amravati University, Amravati
Mungasaji Maharaj Mahavidyalaya, Darwha
Jijamata Arts College, Darwha
B.B.Arts, N.B.Commerce and B.P.Science College, Digras
Yashwantrao Chavan Arts and Science Mahavidyalaya, Mangrulpir

13	जागतिकीकरणाचा सामाजिक न्यायाच्या संकल्पणेवरील प्रभाव *डॉ.पुरूषोत्तम रामराव बांडे*	62
14	वृद्धांच्या समस्यांचे विश्लेषणात्मक अध्ययन *प्रा.डॉ. अमरिष एस. गावंडे*	69
15	भारतीय स्त्रीचे समाजातील स्थान *डॉ. सुनिल बी. चकवे*	74
16	क्रांतीज्योती सावित्रीबाई फुले यांचे सामाजिक क्षेत्रातील योगदान *प्रा- डॉ-मंजुषा एच- धापुडकर*	77
17	सामाजिक कार्य करणाऱ्या स्त्रियांच्या आत्मचरित्रांचे मराठी साहित्यातील योगदान *प्रा. डॉ. संतोष विष्णू चतुर*	80
18	कौटुबींक हिंसाचार विरोधी कायदा : आकलन, वास्तविकता आणि आव्हाने *प्रा.व्ही.एम. मुधाने*	85
19	भारतीय राजकारणामध्ये महिलांचे योगदान *डॉ विजय मु. गावंडे*	90
20	आधुनिक समाज सुधारणेत महिलांचे योगदान *डॉ.शरद जा. वाघोळे*	93
21	आधुनिक काळातील पालक–बालक संबंध एक अध्ययन *प्रा. रूपाली सुभाषराव कणसे*	96
22	स्त्री आणि शेती व्यवसाय | *प्रा.सौ.सुषमा सु.जाजु*	101
23	भारतातील महिला शिक्षण: एक विश्लेषण | *डॉ. मधुकर श्रीराम ताकतोडे*	105
24	महिला सक्षमीकरणासाठी भारतीय कायदे आणि सद्यस्थिती *सरिता दिनकरराव देशमुख*	109
25	किशोरवयीन मुलांच्या शारिरीक वाढीसाठी उपयुक्त आहार तालीकाचे महत्व *प्रा. कल्पना वामनराव गोडें*	113
26	महिलांचे सामाजिक योगदान कुटुंबाचे आरोग्य व पोषण संदर्भात *प्रा डॉ. अपर्णा अ. पाटील*	117
27	शेतकऱ्यांसाठी डॉ. आंबेडकराचे कार्य *प्रा.डॉ.सिध्दार्थ वाठोरे*	121

THE RUBRICS JOURNAL OF INTERDISCIPLINARY STUDIES
International, Peer Reviewed, and Indexed e Journal

ISSN 2454-1974

THE RUBRICS
Journal of Interdisciplinary Studies
Volume 5 Issue 2 March 2023
www.therubrics.in

क्रांतीज्योती सावित्रीबाई फुले यांचे सामाजिक क्षेत्रातील योगदान

प्रा. डॉ.मंजुषा एच. धापुडकर
इतिहास विभाग प्रमुख महिला महाविद्यालय अमरावती

संशोधन लेख

प्रस्तावना

स्त्री म्हटले की आपल्या डोळ्यासमोर आधी एकच प्रतिमा येते ती म्हणजे चूल आणि मूल पण ही परिस्थिती आता मात्र पूर्णपणे बदललेली आहे. पण हा एवढा बदल क्षणात नक्कीच झाला नाही. त्यासाठी खूप हाल अपेष्टा सोसाव्या लागल्या. फुले यांचे कार्य विशेष महत्त्वाचे ठरते.याचबरोबर राजमाता जिजाबाई अहिल्याबाई होळकर रमाई यांचे कार्य देखील तेवढेच बोलके आहे

भारत देशातील प्रत्येक स्त्रीच्या जीवनाला ज्ञानाचा आनंद देणाऱ्या शिक्षणाची ज्ञानगंगा प्रत्येकाच्या घराघरात पोहोचविण्यासाठी पहिल्या महिला जन्मदात्या म्हणून अजरामर असणाऱ्या क्रांतीज्योती सावित्रीबाई फुले ह्या होतए समाज व्यवस्था मुळासकट उपटून फेकून देण्याचे धाडस बाणेदारपणा आणि जोखीम आपल्या पतीबरोबर सावित्रीबाई फुलेंनी स्वीकारलेली होतीए महात्मा ज्योतिबा फुले यांची धर्म पत्नी या नात्याने सामाजिक परिवर्तनाच्या वाटेवरील पहिली आद्य वाटसरू म्हणून अग्रक्रमाने सावित्रीबाई फुले यांनाच मानाचा मुजरा करावा लागतोए सावित्रीबाईनी ज्या समाजाला घडविले त्यातील एक स्त्री जेव्हा पंतप्रधान तसेच राष्ट्रपती देखील होतेए हीच सावित्रीबाईंच्या कार्याची पावती आहेए आज कोणते क्षेत्र असे नाही की ज्यात स्त्रिया नाहीतए त्यांचे नेत्रदीपक यश सर्वांचे लक्ष वेधून घेत आहे.

जीवनवृत्तांत

दिनांक ३ जानेवारी १८३१ साली सावित्रीबाईंचा जन्म सातारा जिल्ह्यातील नायगाव या खेड्यात नेवासे पाटील या कुटुंबात जन्म झाला. पित्याचे नाव खंडोजी व आईचे नाव लक्ष्मीबाई होते. खंडोजींचं कुटुंब अत्यंत श्रीमंत होते. सावित्रीबाईंचा विवाह पुण्यात फुलांचा व्यापार करणारे गोविंदराव गोरे यांचा मुलगा ज्योतिबांशी झाला. ज्योतिबांचं शिक्षण सुरूच होतं तेव्हा आपल्या बायकोने ही शिकावे असे त्यांना वाटत होते. पण त्या काळात मुलींसाठी पुण्यात शाळाच नव्हती. ज्योतिबांनी मळ्यात मातीच्या रेघोट्या पाडून सावित्रीबाईंच्या शिक्षणाचा शुभारंभ केला. सावित्रीबाई झाडांची पाने मोजून १०० पर्यंत पाढा शिकल्या. तिथेच सावित्रीबाईंना जास्त शिकावं असं वाटू लागले. सोबत सगुणाबाई होत्याए ज्योतिबांनी सावित्री आणि सगुणा यांना मळ्यातच काम करताना शिकविलं परंतु त्यांची परीक्षा झाली नव्हती. त्यावेळी मिसेस मिचेल पुण्यात एक नॉर्मल स्कूल

ISSN 2454-1974

चालवीत असत. ज्योतिबा मिसेस मिचेल यांना भेटले आणि छबीलदास वाड्यात भरणाऱ्या नॉर्मल स्कूलमध्ये मिचेल मॅडमने सावित्रीबाईंची कसून परीक्षा घेतली आणि खुश होऊन सावित्रीबाईंना नॉर्मल स्कूलमध्ये प्रवेश दिला सावित्रीबाईंनी दोन वर्षात शिक्षिकेचा कोर्स पूर्ण केला व त्या उत्तीर्ण झाल्या.

स्त्री शिक्षणाचा पाया दिनांक १ जानेवारी १८४८ साली ज्योतिबा फुले यांनी पुण्यात बुधवार पेठेतील भिडे वाड्यात मुलींसाठी भारतातील पहिली स्वतंत्र शाळा काढली. याच वाड्यात स्त्री शिक्षणाचा पाया रोवला गेला. पहिल्याच दिवशी सहा मुली दाखल झाल्या. सावित्रीबाई फुले ह्या पहिल्या भारतीय स्त्री शिक्षिका झाल्या स्त्रीला शिक्षणाचा अधिकार नाही हा अधर्म आहे असे सनातन्यानी धर्मशास्त्र उघडले. ज्योतिबा आणि सावित्रीबाईंनी त्याकडे दुर्लक्ष करून ह्या स्त्री शिक्षणाचा पवित्र कार्याला अखंडपणे चालू ठेवले. भिडे वाड्यातए महार वाड्यातु चिपळूणकर वाड्यात नाना पेठेत कसब्यात आणि पुण्याबाहेर हडपसर ओतूर सासवड शिरवळतळेगाव शिरूर अंजीरवाडी आणि नायगाव येथे मुलींच्या शाळा काढून शिक्षणाची गती गतिमान केली. धर्म मार्तंड यांनी मग ज्योतिबांच्या वडिलांचे कान भरलेए त्यांनी ज्योतिबा व सावित्रीबाईंना नाईलाजाने मनाला न पटताना घराबाहेर काढलेकेवळ समाजाच्या भीतीपोटी त्यांनी असे केले. ज्योतिबा सावित्री घराबाहेर पडताना त्यांच्या मातापित्यांचे हृदय पिळवटून ते अश्रू ढाळत राहिले. सावित्रीबाई शिक्षिका झाल्याए मुख्याध्यापिका ही झाल्या तरीही माळी समाजाने त्यांच्यावर बहिष्कार घातला. सावित्रीबाई आपल्या कार्यावर अढळ होत्या. मग सावित्रीबाईंचा सनातन्यांनी छळ सुरू केला शाळेत शिकविण्यासाठी जाताना सनातनी स्त्रिया सावित्रीबाईंच्या अंगावर केर कचरा शेण फेकत पण सावित्रीबाईंनी त्यांना धाडसाने उत्तर दिले. सावित्रीबाईंचा मानसिक छळ चालूच होता. तरीही त्या न डगमगता त्याला धैर्याने तोंड देत होत्याए विनावेतन शिक्षण दानाचे पवित्र कार्य फुले दांपत्य करीतच होते.

सामाजिक कार्य

१८६३ साली सावित्रीबाई फुले यांनी विधवांच्या बाळांतपणासाठी आणि त्यांच्या मुलांच्या संगोपनासाठी स्वतःच्या घरात बालहत्या प्रतिबंधक गृह स्थापन केले यामध्ये ३५ विधवा स्त्रिया होत्या स्वतः त्यांनी त्यांची बाळंतपण केले व त्या त्यांच्या आई बनल्या. दिनांक १० जुलै १८८७ ज्योतिरावांनी आपले मृत्युपत्र तयार करून ते उपनिबंधक कार्यालयात नोंदविले. त्यात त्यांनी सावित्रीबाई ही सारी बाळंतपणे पोटच्या मुलीसारखी करत असे. या कार्यामुळे त्या स्त्री जातीच्या आई ठरल्या केशवपण विरुद्ध आवाज उठवून चळवळ उभी करावी असा विचार ज्योतिबांनी बोलून दाखवीतच सावित्रीबाई पुढे सरसावल्या. त्याकाळी केस नाव्ह्याकडून कडून काढून टाकीत. विधवेस संन्यासीनीचे जीवन जगणे भाग पाडले जाईल. त्यांच्या डोक्यावरील संपूर्ण असे तिला बोडखी करून नेसायला पांढरे वस्त्र देण्यात येईल. सावित्रीबाईंनी नव्ह्याचीच एक सभा बोलावून आपण आपल्या ह्या भगिनीवरच वस्तरा चालविणे पाप आहे हे पटवून दिले. नव्ह्याना सावित्रीबाईंचे म्हणणे पटले व त्यांनी केशवपण विरुद्ध संप पुकारलाए त्या संपामुळे सनातनी रुढींना प्रचंड हादरे बसले. त्यांचे श्रेय सावित्रीबाईंनाच द्यावे लागते.

पाणी ही सर्व विश्वाचे जीवन आहे ते निसर्गाची देण आहे. परंतु अस्पृश्यांना विहिरीवर पाणी भरण्यास बंदी होती. १८६८ ला आपल्या वाड्यातील हौद अस्पृश्यांसाठी खुला केला. सावित्रीबाई स्वतः त्या कामी सक्रिय सहभागी झाल्या होत्या. १८७५ साली महाराष्ट्रात कोरडा दुष्काळ पडलाए त्यावेळी दुष्काळग्रस्तांचे हाल पाहून फुले दांपत्याचे अंतरूकरण गहिवरले. धनकवटी येथे अन्नछत्र उभारून भुकेल्यांच्या पोटी घास

ISSN 2454-1974

घातलेण त्यांचे कार्य पाहून अनेक धानिकांनी त्यांना सडळ हस्ते मदत केली. अन्नछत्रालयात सावित्रीबाई स्वतः अन्न वाढण्यास काम करीत होत्या.

सावित्रीबाईनी ज्योतिराव फुले यांच्या मदतीने स्वतःच्या घरात वस्तीगृह चालविले. अनेक मुले तेथे येत. त्यांना स्वतःला मूल नसताना काशीबाई या विधवेच्या यशवंत या मुलास दत्तक घेऊन त्याला डॉक्टर बनवून त्याचा आंतरजातीय विवाह घडवून आणला. जुलै १८८७ रोजी ज्योतिरावांना पक्षघाताचा आजार झाला. त्यामुळे त्यांना या अवस्थेत उजवे अंग लुळे पडले. त्यामुळे त्यांना या अवस्थेत अनंत अडचणीला सामोरे जावे लागले होते. कारण ज्योतीरावांनी काढलेली पुणा कमर्शियल अँड कॉंट्रॅक्टिंग ही कंपनी बंद पडल्यामुळे त्यांचे उत्पन्नाचे मार्ग बंद पडलेण पण तन.मन.धनाच्या तुफानी चक्रीवादळात सावित्रीबाई सापडल्या तरीही त्या न डगमगता खंबीरपणे उभे राहून त्यांची त्यांनी पतीची सेवा करीतच शिक्षिकेचे काम करून या देशाला स्त्रीच्या जातीच्या उन्नतीची पहाट बहाल केली.

१८९७ साली पुण्यात मोठी प्लेगची साथ आली. माणसं पटापट मरू लागली त्यावेळी त्यांचा दत्तक पुत्र डॉक्टर यशवंत यांच्या सहकार्यांनी सावित्रीबाईनी रोग्याची सुश्रुषा केली. पण एके दिवशी एका अस्पृश्यांच्या मुलाला खांद्यावरून आणताना सावित्रीबाईनाही प्लेगानं धरलं आणि १० मार्च १८९७ रोजी एका क्रांतिकारी महान माऊलीनं जगाचा निरोप घेतला.

निष्कर्ष

. सावित्रीबाई फुले यांच्यामुळेच आज महिला प्रत्येक क्षेत्रामध्ये उच्च पदावर आरूढ झाल्यो. त्यांनी विधवांसाठी आश्रम सुरू केले एक स्त्री शिकली तर संपूर्ण कुटुंब शिक्षित होते मुलींसाठी शाळा सुरू केल्या त्यांनी भारतात पहिला आंतरजातीय विवाह घडून आणला तसेच विषमतेविरुद्ध ही आवाज उठविला विधवांच्या केशव पणावीरूद्ध संप घडवून आणलाए वैचारिक शैक्षणिकए राजकीयए सांस्कृतिक योगदान देणारे सर्वश्रेष्ठ क्रांतीज्योती सावित्रीबाई अग्रणी ठरतात

संदर्भसूची

१ रानडे ए. शांता. सावित्रीबाई ज्योतिबा फुले जीवन कार्य प्रकाशक लोक वाड.मय बृहमुंबई
२ राजपूत रघुवीर सिंह. महात्मा ज्योतिबा फुले संकेत प्रकाशन प्रा लि
३ कीर धनंजय महात्मा फुले समाजक्रांतीचे जनक पाप्युलर प्रकाशन मुंबई
४ माळी मागु क्रांतीज्योती सावित्रीबाई फुले आशा प्रकाशन
५ बाबर डॉ सरोजनी. स्त्री शिक्षणाची वाटचाल शिक्षण संचालनालय महाराष्ट्र शासन पुणे.

आज़ादी का
अमृत महोत्सव

संगीत मंतव्य

सांगीतिक लेख संग्रह

सम्पादक
डॉ. आकांक्षा पाल

32 संगीत में राग-ध्यान की अवधारणा 182
– बबलू कुमार 'केतन'

विभिन्न सांगीतिक घराने

33 तबले के घराने एवं सुप्रसिद्ध वादक कलाकार 191
– मोना एवं डॉ. निष्ठा शर्मा

34 दरभंगा घराने की ध्रुवपद परम्परा 199
प्रो० पंडित प्रेम कुमार मल्लिक एवं मोनिका धर

संगीत चिकित्सा

35 संगीत चिकित्सा का शारीरिक व मानसिक रोगों पर प्रभाव 207
– डॉ. स्वाती गौर

36 Music and Mental Health 214
— Dr. Niti Bhatt

लोक संगीत

37 लोक संगीत और फ्यूज़न संगीत 221
– डॉ. आलाप देवड़ा

38 भारतीय जनमानस के जीवन का सजीव वर्णन करते लोकगीत 226
– कुँवरप्रीत सिंह

अन्तर्विषयक सांगीतिक लेख

39 Madhyam a Prominent Note in the Octave 235
— Jayateerth Kulkarni

40 मानव जीवन शैली में संगीत कला का महत्व 239
– डॉ. रश्मि गुप्ता

41 तराना गायन शैली : निरर्थक शब्दों का अर्थपूर्ण व्यवहार 242
– डॉ. ज्योति मिश्रा

42 भारतीय अभिजात संगीत के उत्पति संदर्भीय नवीनतम दृष्टिकोण 245
– प्रा. डॉ. अंकुश गिरी

भारतीय अभिजात संगीत के उत्पति संदर्भीय नवीनतम दृष्टिकोण

प्रा. डॉ. अंकुश गिरी

संगीत विभाग

महिला महाविद्यालय, अमरावती, महाराष्ट्र

सारांश

भारतीय शास्त्रीय अभिजात संगीत के उत्पत्ति के सन्दर्भ में विविध स्तर पर अनुसन्धान हुवा है। पर अभी भी कुछ पक्ष दुनिया से परे है जो काफी महत्वपूर्ण है। किसी भी तथ्य को समजने के लिए किसी एक दृश्टिकोण से समझा नहीं जा सकत। ठीक ऐसा ही भारतीय अभिजात संगीत के सन्दर्भ में दिखाई देता है। भारतीय अभिजात संगीत के उत्पति विषयक वर्त्तमान में कुछ नए सन्दर्भ अन्तर्मुख करने में प्रेरित करते है। इन सभी विचारोंका शीर्षक संदर्भीय विचार प्रस्तुत शोध लेख में किया गया है।

उद्देश्य

1. भारतीय अभिजात संगीत के उत्पति संदर्भीय धार्मिक दृश्टिकोण की चिकित्सा करने हेतु।
2. भारतीय अभिजात संगीत के उत्पति संदर्भीय मनोवैद्यानिक दृश्टिकोण की चिकित्सा करने हेतु।
3. भारतीय अभिजात संगीत के उत्पति संदर्भीय वैज्ञानिक दृश्टिकोण की चिकित्सा करने हेतु।

प्राक्कथन

संगीत षिक्षा के प्रारंभिक स्तर से ही मुझे प्रस्तुत विषयमें काफी दिलचस्पि रही है। इसी चिकित्सावष प्रस्तुत विषयका अध्ययन विविध दृष्टिकोनसे इस शोध निबंध में किया है। भारतीय लोक संगीत तथा शास्त्रीय संगीत प्राचीन कालसे ही विलीन स्वरूप में एकदुजे में सम्मिलित होते हुये खुद की आकृति से स्पष्टतासे अलग दिखाई देते है इन्हीं अंतर्गत सह संहसंबंध को हम धार्मिक, मनौवैज्ञानिक तथा विज्ञान की कसोटीपर देखेंगे।

धार्मिक दृष्टिकोन

प्राचिन भारतीय प्रबुध्द ऋषियों मनीषीयों एवं द्रष्टाओं ने सृष्टि की उत्पत्ति ही नाद ब्रम्हम से मानी थी। षिव, ब्रम्ह, सरस्वती, गन्धर्व और किन्नर जो हम अपनी संगीत कला के आदि प्रेरक मानते चले आये है इसके मूल में यही भावना हि संगीत कला दैवी प्रेरणा से ही प्रादूर्भूत हुई है। ऐसा माना जाता है की ब्रम्हा ने संगीत का निर्माण किया तथा उसे षिवजी को दिया। षिव से यह सरस्वती को मिला, सरस्वती ने नारद को तथा नारद ने इसका प्रचार गंधर्वो, किन्नरों आदि में किया। इस प्रकार संगीत प्रसारित होता गया।[1]

अन्य मत के अनुसार षिव ने पूर्व, पष्चिम, उत्तर, दक्षिण तथा आकाष की ओर अपने पांच मुखों से पाच राग भैरव, हिंडोल, मेघ, दीपक राग बताये तथा पार्वती ने छठा राग कौषिक उत्पन्न किया[2] ब्रम्हांड की प्रत्येक चराचर वस्तू में नाद व्याप्त है। अतएव इस नाद को 'नाद–ब्रम्ह' संज्ञा दी गई है। इसी से राजयोगी महाराज भर्तृहरि ने अपनी पुस्तक'वाक्यवादी' में नाद को ब्रम्हा माना है। वे कहते है–

अनादिनिधनं ब्रम्ह शब्दत्वायदक्षरम्।
विवर्तते अर्थभावेन प्रकिया जगातोयतः।।

अर्थात–शब्दरूपी ब्रम्ह अनादि, विनाष–रहित और अक्षर है तथा उसकी विवर्त प्रकिया से ही यह जगत् भासित होता है।[3]

हर धर्म में अनेक कथायें प्रचलित है जो संगीत की उत्पत्ति के विषय में बताती है। भारतीय हिंदू विचारधारा के अनुसार संगीत का मूल सामवेद है। धार्मिक पृष्ठभूमि की धरोहर पर संगीत को गंधर्व विद्या भी कहा है। इसलिये सामदेव का उपवेद गंधर्व वेद है। 'सामवेद ऐसा वेद है जिसके मंत्र यज्ञों में देवताओं की स्तुती करते हुए गाए जाते थे। 'तैत्तिरिय उपनिषद्' में संगीत का येथेष्ट दिग्दर्षन है। 'छांदोग्य औंर बृहदारण्यक' उपनिषदो में साम गायन का उल्लेख है।[4] संगीत शास्त्र के सिध्दांतो और नियमों का सर्वप्रथम उल्लेख 'ऋक् प्रतिषाख्य' में मिलता है। इसमें तीन स्थानो और सप्त स्वरों का उल्लेख है।[5]

वेदोंत्तरकालीन साहित्य में भी संगीत प्रियता के उल्लेख मिलते है। पाणिनी ने भी अपनी 'अष्टध्यायी' में संगीत संबंधी कई उल्लेख किये है। 'अष्टध्यायी' में अनेक प्रकार के वाद्यों के नाम आये है–मृदंग (4।4।85), मुड्डक (हुडक) और झर्झर (झांझ, 4।4।56), तूर्याग (वृंद–संगीत 2।2।2), गायक (गानेवाला) और नर्तक (नाचलेवाले), का (3।1।145–146) उल्लेख आता है। पाणिनि ने अपनी 'अष्टाध्यायी' (4।3110) में शिलालि और कृषाष्व के रचे नट सुत्रों को उल्लेख किया है।[6]

संगीत कला की उत्पत्ति के भारतीय धार्मिक विचारों से देव देवताओं को प्रेरक माना गया है। संपूर्ण विष्व में प्रचलित धार्मिक मान्यताओं का अगर हम विचार करें तो सभी ने धार्मिक विचारा अनुसार देवी देवताओं को संगीत के निर्मिती का स्त्रोत माना है। फारसी की एक कथा में ऐसा कहा है की हजरत मूसा पैगम्बर को एक पत्थर मिला। इस पत्थर के सात तूकडे हो गये। जिनमें से सात धाराएं बहने लगी तथा हर धारा से अलग ध्वनियॉ निकली जो सात स्वर बन गये।[7] इस्लाम के प्रचार के पहले अरब में भक्ति संगीत, लौकिक संगीत और लोक संगीत मुख्यतः प्रचार में था। भक्ति संगीत

के माध्यम से वे लोग अपने देवी देवताओं की पूजा गायन और नृत्य व्दारा करते थे। मुस्लिम राष्ट्रो और मुस्लिम जातियों का संगीत अरब, उत्तर अफ्रीका और पार्षिया तक विस्तृत है। अरब संगीत के शास्त्रीय ग्रन्थों में नववी शताब्दी के अलकिंदी, अलफरेबी, अवीसेन्ना (11 वी शताब्दी), सैफुदिदन (13 वी शताब्दी), अब्देल कादिर (15 वी शताब्दी) उल्लेखनीय है।[8] चीनी संगीत की परम्परा पौराणिक है। इसके अनुसार सम्राट फ्यूसी (2852 इ.पू.) वहॉ की प्रारम्भिक संगीत पध्दती के प्रवर्तक है. फ्यूसी के अतिरिक्त चार अन्य दैवी शासक (डिव्हान रूलर) हूए।[9]

प्राचिन ग्रीस व रोम के धार्मिक संगीत में केवल पाच स्वरों का प्रयोग किया जाता था। वहॉ के मठ तथा मंदीरों में विविध ज्ञान विज्ञान के साथ संगीत की भी षिक्षा दी जाती थी। वहा के संगीत तज्ञों में 1300 इसा पू. ऑर्कियस का नाम उल्लेख है। अपोलो ग्रीक के सुर्य देवता थे जो उत्तम लायर वादक तथा संगीत संरक्षक के रूप में प्रसिध्द थे।[10]

धार्मिक दृष्टीकोन से हमारे भारत में हि नाही अपितू संपूर्ण युरोप, अरब, फारस ग्रीक, चीन, जपान, जावा, कम्बोडिया, बाली और मीश्र में देव को संगीत का आदि प्रेरक माना है। संगीत को यूनानी भाषा में शब्द है मौसिकी, लैटिन में मुसिका, फ्रांसीसी में मुसीक, अंग्रजी में म्यूजिक इब्रानी, अरब और फारसी में मोसीकी। इन सब शब्दों में साम्य है।

इन सभी तत्वों का अगर हम मतितार्थ निकाले तो यही निष्पन्न होता है की धर्म का सभी सभ्यता तथा संस्कृतिपर भारी पगडा रहा है। और परमेष्वर तथा ईष्वर प्राप्ति के लिये संगीत के अलावा दूसरा कोई सषक्त माध्यम नही। मानव सदा से ही ईष्वर की असीम कृपा के लिए संगीत का उपयोग करता रहा है। भारत नाही किंसी भी देष में प्रार्थना, आरती, अजान, आदी स्वरूपों में संगीत का महत्व उच्च स्थर का है। वल्लभ संप्रदाय में तो सूबह से लेकर रात तक केवल धृपद गायने करने से विविध ऋतूओं में उन भाव अनुरूप राग समय चक्र व्दारा रागों का चयन कर के पुरी तन्मयतासे पूजाअर्चा कि जाती है। मंदीरो में आरती, मज्जीद में अजान, चर्च में प्रेअर के सिवा शुरूवात ही नही होती। इसिलिये संगीत में प्रवीण कलाकारों का महत्व सदासे ही समाज में उच्च स्थर का रहा है। इन सभी उपरोक्त सभी संदर्भ से यह पूष्टी मिलती है की धर्म और संगीत अलग न होकर एक दूसरे में पूर्णतः विलय है।

2. मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण

बाद के उगम और निर्मिती संबंध में उपस्थित प्रष्नोंपर भारतीय विचार जगत में बहुत सारा मंथन हूआ है। बारावी शताब्दि के शुरूवात में योग, तंत्र, आयूर्वेद, संगीतषास्त्र, तत्वज्ञान, धर्मविचार, व्याकरण आदि ने अपने मत प्रस्तुत किये जो जनमत व्दारा स्विकृत भी हुए। इस वक्त मानसषास्त्र काफी उन्नत हो चुका था। संगीत के उत्पत्ती पर मनोवैज्ञानिक विचार भी सामने आये।

भारतीय योग, आध्यात्म, तंत्र विचारा धाराओं अंतर्गत मानवी शरीर बाहरी व्यापक विष्व (ब्रम्हांड) की पूर्ण प्रतिकृति है। शरीर पर विषिष्ट प्रकार से साधना करके शरीरस्थ आत्मा विष्वस्थ परमात्मा इनका एक्य प्रस्थापित करना यही उद्देष्य इन शास्त्रज्ञोंनें अपना लक्ष माना है। मनोवैज्ञानिक

दृष्टीकोण से मानवी शरीर में नाद की उत्पत्ति के बारे में गंधर्व वेद में कहा है की प्रथमतः उदान वायू नाभिचक्रमें स्थित मणीपूरक मर्म आघात करके मूळधारचक्रव्दार हृदयमर्मा पर नाद की किया उत्पन्न करता है। यह किया उत्पन्न होते समय इडा, पिंगला और सुषन्मा इन नाडीयों व्दारा उनको मदत होती है। यह से यह नाद हृदय की अत्यंत सूक्ष्म असंख्य, अतिसूक्ष्म नाडीयों से जाकर ब्रम्हरंध्रतक पोहचता है और यहा से कंठ की मर्मस्थान में आकर मुख्य व्दारा बाहर आता है। इन सभी किया कों इतना सूक्ष्म वक्त लगता है की उसको माप नही सकते। इसिलिये सोमनाथ ने नाद को पॉचवा उपवेद माना है।[11]

भारतीय विचारधारा आत्मानुभूति की परिवक्ष में ज्यादा संवेदनषिल होने की वजह मनोवैज्ञानिक दृष्टीसे अति सूक्ष्म विचार प्रगट किये है। इसिलिये पाष्चात्य विव्दानाने मानसषास्त्र के अंतर्गत संगीत के उगम पर कुछ अलग विचार प्रगट किये है। विष्व विख्यात मानसषास्त्रज्ञ सिग्मन फ्राईट के अनुसार संगीत का जन्म एक षिषू के समान मनोवैज्ञानिक आधार पर हूआ। जिस प्रकार एक षिषु हंसना, रोंना अपने आप सिख जाता है उसी प्रकार संगीत का प्रादुर्भाव मानव में मनोविज्ञान के अनुसार हूवा। जेम्स लैंक के अनुसार पहले मानव ने बोलना, चलना सीखा फिर धीरे धीरे कियाषील होने पर उसके अंदर संगीत स्वतःही उत्पन्न हो गया। जाकोबिल ने अपनी पुस्तक में लिखा है की मानव को संगीत का ज्ञान कैसे हुआ यह एक विवादास्पद प्रष्न है। पर फिर भी इतना तो कहा जा सकता है कि जब मानव को भूख तथा प्यास महसूस हूई होंगी, तभी उसे अपने अंदर संगीत की हलचल महसूस की होगी। ऐसा माना जा सकता है क्योंकि अभीतक कोई ठोस तथ्य नही मिले है। परंतु इतना तो कहा जा सकता है की मानव को संगीत का ज्ञान अन्य सभी कलाओं के पहले हूआ है।[12]

डार्विन का कहना है की पषु मैथून के समय कुंजन या मधूर ध्वनी करते है। मनुष्य ने जब इन प्रकार की ध्वनि का अनुकरण आरम्भ किया तो संगीत का उद्भव हूआ। कार्ल स्टम्फ की यह धारण है की मानव ने जब ध्वनि के व्दारा संकेत करना प्रारम्भ किया तो भाषा का प्रदुर्भाव हुआ। जब वह उॅची आवाज में चिल्लाता तो वह एक विषेष ध्वनि पर कुछ क्षण के लिये ठहरता। विषेष ध्वनि पर कुछ क्षण के लिये ठहरने से एक विषेष तारता उत्पन्न होती थी। उसी ने स्वर का रूप ग्रहण कर लिया। उसके मत से भाषा संगीत का ही पुर्व रूप है।[13]

उपरोक्त सभी सन्दर्भ से यही पुष्टि होती है की अलग विचार धाराओं अंतर्गत संगीत की उत्पत्ति के बारे में विभिन्न मतो का प्रतिपादन हुआ है। मनोवैज्ञानिक पक्ष व्यक्तिगणीक, भौगोलिक परिस्थिती अनुरूप अलग हो सकता है।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण

प्रकृति ने मानव को विज्ञान एक ऐंसी असिम शक्ति प्रदान की है जिसके बलबूते पर उसने सीमाओं के परे अनछूये सत्य का आकलन किया है। हर सत्य की कसोटीपर विज्ञान ही हर वक्त खरा उतरा है। इसी विज्ञान के आधार पर संगीत के अनछूये उत्पत्ति के रहस्य को हम अलग नजर से देखेंगे।

प्रागऐतिहासिक कालखंड के पूर्व जब मनुष्य अपने विकास के प्रारम्भीक अवस्था से गुजर रहा था तब ना तो उसका बौध्दिक विकास हूवा था ना ही शारिरीक विकास। अन्य प्राणीमात्राओं कि तरह उसका जिवन क्रमित होता था। जंगल में रहने की वजह से अन्य हिंसक प्राणीओं से बचाव हेतू वह समूह में रहने लगा। समूह का कामकाज चलाने हेतू बौध्दिक विकास न होने के कारण केवल मात्र चिन्हो व्दारा प्राथमिक कुछ क्रियाओं को वह व्यक्त करने लगा। समुह में रहने की वजह से माता, पिता, पुत्र, भाई, बहन इन पारिवारिक रिष्तो को वह समझने लगा। पती का पत्नि से लगाव, पत्नि का पती से लगाव, माता पिता का बच्चों से लगाव, इन सभी भावनात्मक लगाव को व्यक्त करने में चिन्ह, शारिरीक तथा मूद्रा भाव और भावात्मक ध्वनिओं को वह उपयोग में लाने लगा। इसि तरह सुख, दुःख,भुक, प्यास, आक्रोष, आनंद, बचाव, सुरक्षात्मक संकेत इन सभी क्रियाओं को वह चिन्ह मुद्रा भाव और ध्वनियो से व्यक्त करने लगा।

चिन्ह, शारिरीक तथा मूद्रा भाव तभी काम आते जब समूह एक साथ हो उनमें कोई रूकावट न हो। पर जब वह एक दूसरे से काफी दूर रहते थे तब ध्वनि के अलावा कोई माध्यम नही था। उन ध्वनिओं का अगर हम विचार करे तो वह काफी उॅचा, दिर्घ और कायम रहना आवष्यक है। तभी दूर खडे साथी उसे सून सकते है। अब प्रष्न यह है की वह आवाज किस तरह का होता होंगा। इसका जवाब अत्यंत सरल है। मानव जंगल में रहता था तब विभिन्न प्राणी, पषु पक्षीओं से वह धिरा रहता। उनके आवाज वह सदैव सुनता था। और मानव का मनोवैज्ञानिक सतह पर अगर हम विचार करे तो यह सर्वमत है की मानव सदा से ही अनुकरणषिल रहा है। इस तरह वह पषु पक्षीओं के आवाज का अनुकरण करने लगा। पषु पक्षी भी अपने विभिन्न भावों को विभीन्न ध्वनिओं व्दारा व्यक्त करते है। अलग अलग ऋतू में उनका आवाज अलग अलग रहता है। पषु पक्षिओं के संबंध के वक्त उत्पन्न होने वाले ध्वनि की श्रृंगारता, लढाई के वक्त होनेवाले ध्वनिओं की भयानकता, षिकार के वक्त षिकारी की बिभत्स और षिकार की करूणता इन सभी रसों के ध्वनिओं का अनुकरण मानव करने लगा।

अभी भी हम देखते है की कुछ व्यक्तिओ की आवाज में जन्मतः काफी मिठास और मधूरता रहती है। ठिक उसी तरह उस वक्त भी कुछ मनुष्य के आवाज के आवाज में मधुरता रही होंगी। अगर वहा उॅची हों आवाज में दिर्घ काल तक उपने साथीयों को पुकार लगाता होंगा तो वह ध्वनि स्वर की अंषतः प्रतिमा प्रस्तुत करता होगा। क्योकि स्वर की परिभाषा करते वक्त हम कहते है की जिस आवाज में स्पष्टता हो, कायम उॅची, माधुर्य हो उसी को स्वर कहते है। इसिलिये यह सिध्द होता है की स्वरों की निर्मिती मानव के प्रारम्भिक अवस्था में ही हुई थी केवल समझ न होने की वजह वह उसे संगीत के रूप में नही देखता था। अभी भी हम देखते है की जिन्हे गाना गाना नही आता वही किसी अच्छे गायक के पास गाना सिखने जाते है। और गाना सिखते वक्त नाद की सुक्ष्मताओं का उसे धीरे–धीरे आकलन होता हैं। ठिक उसी तरह उस वक्त जीसकी आवाज मिठी औंर मधूर थी उसका अनुकरण अन्य मनुष्य करने लगे। और इस अनुकरण में ध्वनिओं की सुक्ष्मताओं का उसे आकलन होने लगा।

यह सभी शास्त्रज्ञों ने सिध्द किया है की मानव ने जब षिकार करके गोष्त खाना शुरू किया तब उसका बौध्दिक विकास ज्यादा होने लगा। ठिक उसी तरह मनूष्य के जिवन विकासक्रम में आग और चक्र के शोध ने उसका जिवन ही पूर्णरूप से बदल दिया। इसी बौध्दिक विकास के कारण जिनकी

आवाज मधूर थी वह चिकित्सावष प्राकृतिक ध्वनिओं का अध्ययन और अनुकरण करने लगे। पेड की सुखी छाल को दिमक खाने हेतू निकालते वक्त होनेवाले ध्वनी, पेड की टेहनी से पेड पर मारने से होने वाला ध्वनि, सुखे पत्तोपर पावस की गिरती बूंदो का ध्वनि, नदीओं की धाराओ का ध्वनि, समुद्र की लहरों की ध्वनि, हवाओं के ध्वनिओं की आस, प्रणीओं के दौडते वक्त उत्पनन ध्वनिओं की लय, भोरे की मधूर गुंजन आदि मधूर तथा लय ध्वनिओं का वह अध्ययन करने लगा। इसी अध्ययन तथा अनुकरण में स्वरों का विकास होने लगा। शायद इसी तत्व अनुसार हमारे भारतीय अभिजात संगीत में भी हर स्वर को पशु पक्षिओं से निर्मित माना गया है। जैसे पं. दामोदर के अनुसार संगीत की उत्पत्ति पक्षियों व्दारा मानते हुए मोर से षड्ज, चातक से रिषभ, बकरा से गंधार, कौआ से मध्यम, कायेल से पंचम, मेंढक से धैवत, हाती से निषाद स्वरों की उत्पत्ति मानी है।[14] श्री गंधर्व वेद में मयूर से षड्ज, चातक से रिषभ, अज से गंधार, क्रौंच से मध्यम, कोकिल से पंचम, अष्व से धैवत, गज से निषाद की उत्पत्ति मानी है।

भारत का प्राचीन इतिहास 3500 ई.पू. के लगभग आरंभ होता है। इस अंधकार युग का कोई इतिहास नही मिलता। अंधकार युग को चार भागो मे बॉटा गया है।

1. पुर्व पाषाण काल
2. उत्तर पाषाण काल
3. ताम्र काल
4. लोह काल

पुर्व पाषाण काल में मानव जंगली अवस्था में रहता था। इन लोगो को पत्थर के प्रयोग का ज्ञान हो गया था। पत्थर के दो चौकोर टुकडे मंजीरे के समान बजाये जाते थे।[15] मानव के विकासक्रम में जब वह खेती का बूनियादी तत्व जानकर खेती करने लगा तब सामूहिक रूप में वह स्थायी हो गया। उबजाउ जमीन के महत्व का उसे ज्ञान हुआ। नदी और उबजाउ जमीन के पास दस, बारह परिवारोंका समूह स्थायी होकर खेत और षिकार करने लगा। समूह में संख्या बढने से विचारों का आदान प्रदान हेतू भाषा का विकास होने लगा। भाषा के विकास से व्यक्तिगत अनुभवों के आधार पर समूह का ज्ञान बढने लगा। इसितरह संगीत कला और अन्य ललित कलाओं के ज्ञान में जल्दि विकास होने लगा। खेतों से स्थायी रूप प्राप्त होने से खाने की चिंता अब मानव को नही रही। और इसी कारणवष वह ज्यादा सोचनेलगा और नाद की सुक्ष्मतम तत्वों पर चिंतन करने लगा। अब संगीत कला प्राकृतिक पषु पक्षिओं के ध्वनिओं का केवल अनुकरण न रहते हुए उसे शास्त्रीय स्वरूप प्राप्त होने लगा। इसी काल में संगीत से मनोरंजन, चित्रकला से जिवन दर्षन, मूर्तिकला से विविध प्राणी, मानव की प्रतिकृतियॉ तथा स्थापत्य कला अंतर्गत घरों का निर्माण होने लगा। केवल काव्य कला का निर्माण शब्दों की लिखावट का विकास ने होने से इस कला में प्रचलन में नही था।

उत्तर पाषाण काल में मानव ने अच्छे हथियार बनाना आरम्भ कर दिया था। सामाजिक भावना का भी प्रचार हो गया था। स्त्री पुरूष दोनों संगीत का आनंद लेते थे।[16] मानव को कबीले के रूप में सामाजिक स्थायित्व प्राप्त होने से सामाजिक विचारों का आदान प्रदान होने लगा। सभी संस्कृतिओं

में जिन लोगो का बौध्दिक विकास ज्यादा था वह उत्सुत्कापूर्वक सृष्टिके रहस्यों को समझने लगे। और इसी उत्सुत्कापूर्वक चिकीत्सा में सृष्टी के पंच महाभूतो का उसे ज्ञान हूआ। देवता के रूप में प्रत्यक्ष स्वरूप में दर्षन देनेवाले सुर्य कि उपासना सभी संस्कृतिओं में होने लगी। धरातल पर अप्रत्यक्ष रूप में प्रतिकात्मक स्वरूप में अग्नि की पूजा होने लगी। भारत में उसे होम के रूप में सुर्य देवता की उपासना के लिये माध्यम माना गया। इसी कालखंड को ताम्र काल माना गया है। भाषा का विकास होकर मानव के संगीत ज्ञान में वृध्दि हुई थी। संगीत को धार्मिक रूप देणे का गौरव इसी युग के मानव को जाता है।

अब प्रष्न यह है की वेद कालिन संस्कृति के पहले, साम के छन्दोबध्द गीतो के पहले विभिन्न स्तोभों का स्वरूप किस प्रकार का रहा होंगा। यहा दो बातों पर विचार करना होगा। पहले तो साम के स्तोभों का उच्चारण और दूसरा उस तरह के उच्चारण का प्रारम्भिक स्वरूप कहा प्राप्त होता है। अध्ययन करने से यह ज्ञात होता है की विष्व भर में 'स्तोभ की ध्वनि समान रूप से अहा, हो, हाउ, ओहा, हे, ल, य, ल, हुम, हॉ, हॉ इत्यादी है। आज भी सामवेद के बहुत से गान में ये स्तोभ वर्तमान है। जैसे एक उदाहरण लिजिये–

स——स–	स——स–	स——स–
हा ऽऽऽ उ ऽ	हा ऽऽऽ उ ऽ	हा ऽऽऽ उ ऽ
सं——नि–ध——प–	सं——नि–ध——प–	
आ ऽ ऽ ऽ ज्य ड दो ऽऽऽ हम्	आ ऽ ऽ ऽ ज्य ड दो ऽऽऽ हम्–[17]	

आज भी आफ्रिका के अनेक आदिम जन जमाजिओ में जब षिकार अग्नि पर पकाई जाती है तो आनंद और उत्साह प्रदर्षित करने के लिये अहा, हो, हाउ, ओहा, हे, य, ल, हॉ आदि ध्वनिओं का उच्चारण वह करते है। अब और गौर करने की बात यह है की इन दो उदाहरणो में दोन बाते समान है। एक अग्नी और दुसरी विविध ध्वनीयॉ जो एक समान है। यह सिध्द होता है की प्राचीन काल के मानव के आदिम अवस्था में षिकार को अग्नि पर पकाते वक्त होने वाले ध्वनिओं का संसकारीत रूप साम गायन के स्तोभो में हमें प्राप्त होता है। इसी विकासप्रकम में जब मानव होता है।

यह ये ज्ञात होता है की संगीत कला जिसमें गायन नृत्य का अर्विभाव है इन सभी कलाओं का प्रारंभीक स्वरूप आदिम काल में ही तय हो चूका था. षिकार अग्निपर पकाते समय होनेवाला संगीत, नृत्य और वादन का संस्कारित रूप होम हवन के वक्त होनेवाले साम गायन, वादन नृत्य में परिवर्तीत हूआ।

इसी विकास क्रम में जब मानव लोह काल तक आया तो त्यौहार आदि के समय में संगीत का प्रयोग होता था। रंग बिरंगे कपडे पहनकर नृत्य किया जाता था। रस समय मालाएं मुकुट, घुंगरू आदि का प्रचार था।[18] इसके बाद वेद कालिन संस्कृति तथा काल की शुरूवात हूई। वेद काल पूर्व मानव ने अपना बौध्दिक, सामाजिक, राजकीय, धार्मिक, साम्प्रदायिक विकास अच्छे स्तर पर कर लिया था।

निष्कर्ष

प्राचीन काल के उतरार्ध में संगीत की दो धाराये प्रवाहीत हुई, मानोरंजन के लिये लोक संगीत का विकास हुआ तथा आत्मरंजन और धार्मिक कार्य अंतर्गत सामगायन की निर्मीती हूई। लोक संगीत सभी लोगो का मनोरंजन का माध्यम होने से वह सहज और सूलभ रहा। इसके विपरीत साम गायन पर हमेषा संस्कार हुए और उसका विकसित रूप आज शास्त्रीय गायन में हम देख सकते है। सभी तत्वों से एक विचार यह सामने आता है की लोक संगीत के प्रभाव लोक संगीत पर पडा। इसी शास्त्रीय संगीत का प्रारंभीक प्रभाव सामगायन के निर्मिती के लिये आवष्य रहा। परंतु सामगायन की संहीता तय होने के बाद सामगायन खुद अपने शास्त्र से विकसीत होता गया। और जब सामगायन के विसा कम कें संहीता, षास्त्र विकसीत हुए तो उनका प्रभाव लोक संगीत पर पडा। इसी शास्त्रीय संगीत के प्रभाव कारण लोक संगीत से उपषास्त्रीय संगीत की निर्मिती हुई। वेद कालीन शास्त्रीय संगीत की संहिता तय होने से उसपर लोक संगीत का कोई प्रभाव नव राग निर्मिती के अलावा नही पडा। मानसिक और शारिरीक मनोरंजन से मन और आत्मा के आत्मरंजन का प्रवाह लोक संगीत से शास्त्रीय संगीत की दिषा क्रमित करती है।

संदर्भ सूची

1. संगीत मॅन्युअल–डॉ.मृत्यंजय शर्मा–पृ.क्र.83
2. पूर्वोक्त पृ.क्र.83
3. निबंध संगीत–लेख सदीयो वर्ष पूर्व जब धरतीपर संगीत लहराताथा, लेखक डॉ.मृत्यंजय शर्मा–पृ.क्र.123
4. पूर्वोक्त पृ.क्र.127
5. पूर्वोक्त पृ.क्र.127
6. पूर्वोक्त पृ.क्र.127
7. संगीत मॅन्युअल–डॉ.मृत्यंजय शर्मा–पृ.क्र.83
8. संगीत विषारद–प्रभूलाल गर्ग, वसंत पृ.क्र.424
9. पूर्वोक्त पृ.क्र.416
10. पूर्वोक्त पृ.क्र.424
11. श्री गंधर्व वेद–गायन वादन नर्तनसंगीत ज्ञानकोष–पं.वसंत माधव खाडिलकर, पृ.क्र.57–58
12. संगीत मॅन्युअल–डॉ.मृत्यंजय शर्मा–पृ.क्र.83
13. भारतीय संगीत का इतिहास–डॉ.ठाकूर जयदेव सिंह पृ.क्र.2
14. संगीत मॅन्युअल–डॉ.मृत्यंजय शर्मा–पृ.क्र.85
15. श्री गंधर्व वेद–गायन वादन नर्तनसंगीत ज्ञानकोष–पं. वसंत माधव खाडिलकर, पृ.क्र.74
16. पूर्वोक्त पृ.क्र.109
17. म्यूजिक ऑफ हिंदूस्थान–फॉक्स स्अंगवेज–पृ.क्र.272
18. संगीत मॅन्युअल–डॉ.मृत्यंजय शर्मा–पृ.क्र.110

आज़ादी का
अमृत महोत्सव

संगीत मंतव्य

सांगीतिक लेख संग्रह

सम्पादक
डॉ. आकांक्षा पाल

43 Musical Interaction with Media 253
— Dr. Atul Kamble

44 हिंदुस्तानी संगीत के प्रायोगिक पक्ष में संस्कृत भाषा का स्थान 258
– डॉ. स्वप्निल चंद्रकांत चाफेकर

45 शास्त्रीय गायन में "रियाज़" का महत्व 267
– डॉ. प्रतिमा गुप्ता

46 संगीत और आध्यात्म 271
– डॉ. नागेन्द्र मिश्र

47 महाराष्ट्र में आंबेडकरी गतिविधियों के संगीत प्रवाह का उद्‌गम एवं विकास 273
– डॉ. सागर दिवाकर चक्रनारायण

48 जगद्‌गुरुश्रीदेवनाथ पीठ परंपरा के माध्यम से लोक जनजागृतीक काव्य का सांगीतीक अध्ययन 280
– पुष्पक पद्माकर भिरंगी

49 संगीत की धरोहर लखनऊ 286
– आकर्शिता श्रीवास्तव

50 ताल के परिवर्तित स्वरूप का महत्व भारतीय संगीत के परिपेक्ष में 291
– श्रेया राज

51 Indian Classical Vocal Music: Traits and Trends 295
— Harshna Dangre & Dr. Ankush Giri

52 संगीत रसभाव 300
– प्रतिभा गंगाराम क्षीरसागर

53 नायकी और गायकी 303
– सृष्टी विलास मनोहर

Indian Classical Vocal Music: Traits and Trends

Harshna Dangre
NET Scholar,
Mahila Mahavidyalaya,
Jog Chowk Amravati

Dr. Ankush Giri
Supervisor Department of Music Mahila
Mahavidyalaya, Jog Chowk Amravati

ABSTRACT

Any music origins in the society and develops with the changing realities of it. It accepts new and modified the existing in different periods of time. This process of acceptance and rejection makes any form of art exist for long. Similarly in various phases of transition Indian Classical music has embraced the elements which question its traits, especially in this highly technical world. The paper tries to point out those changes and analyses them in a legitimate manner.

The thought of this research paper is related to centre of new vision and area of Performance in Music. In this new realm need to give wings of creative abstraction to expand the melody of music in every aspects. Two main points to think one is to renew the dogmas with new update reality and second is to lighten the hidden dark path of mysterious prophecy which is discovered only by the digital scientific tools. Such as to analyse different kind of Raag and its authentication & New methods to teach aesthetic in music.

Research Methodology

Used survey report, Reference in books, Internet

Objectives

1. To know the new advance research in Music
2. Its benefit in Music

creation and beauty. He always likes to remain the devotee of beauty. Human becomes blissful when he gets the endless joy through the organs or soul of the beauty of art; it is called the self-experience of aesthetics. Whenever and appreciator comprehends the present through the brain, he gets extra ordinary self-experience about the beauty of that art.

Need of Research in Music

The need of preserving traditional compositions of great ustads in a politically unrest situation and western influence gave rise to the writing down and recording music in Indian Classical music. The less popular compositions of the exponents are still alive on the texts and are sung by present musicians. The vintage which might have been lost in the history is retrieved for aeon. As Brian Q. Silver discussed- "Recording have served as invaluable tools to musicians for self-assessment and the improvement of their own musical skills. They have also provided precise documentation of the traditions of the past masters, as well as a source of new ideas for the musicians to study the techniques and approaches of others (often competing) musicians, allowing them to incorporate such techniques into their own performance styles. Certain classical artists have been able virtually to duplicate styles of other musical traditions (gharana) without any direct study within those traditions, even identifying themselves explicitly as exponents of the traditions (the disciples of the late vocalist Amir Khan, for example) (B. Q. Silver, 2000). "Pt. Vishnunarayan Bhatkhande (1860-1936) and Pt. Vishnu Digambar Paluskar

(1872-1931), Sourindra Mohan Tagore (1840-1914) and others scholars' notable contribution in this regards have given different dimension to the music. Rarest old compositions are available till dates because of their efforts and carry forwarded the legacy through the generations.

Various researches have been done on Regional music, Folk music, Dhrupad, Dhamar, Tarana, Chaiti, Hori, Kajari etc. Music is totally based on the scientific and psychological principle. But many of the subjects related to music are still ignored. The effect of music is invisible, it first effects on the psychological health and then it can be seen directly on human body. It needs deep scientific study.

Music is an art which flows continuously in every minute part of living and non-living things of nature. It is a very important subject in the field of research. Now-a-days various researches are in process and they are increasing day by day. The contribution of historic artists, study of their life style, study of traditional alignment (Gayki, Raga swaroop) and the research of various subjects, all are becoming more conducive for the production of music.

Psychological Effect of Music

Some of the parts related to music like the effect of music on general audience knowledgeable audience, critics, the relationship between Indian music and western music their similarities and differences, priority to beats and musical notes, the creation dogma of new Raga etc. are still ignored.

New Thoughts and Creativity

The great artists like Kumar Gandharwa, Pt. Omkarnath Thakur, Smt. Kishori Amonkar, Mr. B.R.Deodhar, and Dr. Vidyadhar Oak etc. have broken the bond of traditional shackle and come out of it and put their precious thought about music before the world. In the realm of invention in music we found that Pt. Vishwa Mohan Bhatt has preceded a different musical instrument to the world of music by inventing Mohan Veena from Guitar. A well famed artist M. F. Hussain has expressed the emotions of music in the live concert of pt. Bhimsen Joshi in the form of different colors through his painting. Pt. Ravishankar has also a beautiful confluence of North Indians music to the melody and harmony of Western music in fusion. Pt. Ajay Pohankar has also awarded a marvelous example of singing Indian classical music on Western musical instruments. Ajay- Atul a wonderful pair in recent filmy music has produced new style of music by presenting traditional music in the new and something different form.

Now-a-days various revolutionary steps have been coming forward, and film singers have been producing different type of notation, melody, harmony to the film industry, due to their own aesthetic sense and deep study. Salil kulkarni is another example in the field of music that has brought a new style in the singing concert. Some of the southern and northern Indian musicians have produced fusion based on various musical rhythms. There are so many creative musical views of artists which have made great revolution in this field of music. While investigating the Musical Theory we have to take into account the minute details of effect to compile a formula. We have to understand the difference between mechanical or particular response caused by music and its stimulus.

The uniqueness of Indian music lies in raga, raga is the result of peculiar fabrication of vowels (swara), and every vowel (swara) of raga has certain magnitude sound, nature, lyrical quality, uniqueness rasa and Shruti which adds aesthetic sense to it. Single vowel (Akal swara) and peculiar vowel (vishistha swara) definitely effect on the mind of its listener. While studying Indian classical music and musical theory we have to take into consideration two things. Initially musical effect is different unique for every individual. Everyone has his or her own liking

in general and in music particular. Therefore we have to consider personal interest while using musical theory for different people. Secondly, in music every raga has its own features its (prakruti) nature, purged emotions, (rasunishpati) vowel (swara) and its effect on mind etc. and scholars have studies all these aspects while contributing to the science of music, which is obligatory to all. What I mean is, we have to consider personal interest and scientific parameters of music to investigate musical theory and its effect. By these basic elements music theory would be more effective. Significant effect can be found if we take into account personal liking and the music enhances those ragas.

The next important thing is musical effect is the result of singers, his or her presentation, style, aesthetic sense, lyrical quality, suitability of voice, Gharana, rasunishpati etc. combination of these elements will be elegant, to create innumerable effects. Dhrupad (Refrain), Khyal, Natyasangeet, dadara, Sadara, Thumari, Gazal, Bhavgeet, Filmy Music, Western Music emancipated different effects. Similarly, there will be different effects of instrumental music (Tat, Avanadhya, Ghana, and Sushir), instrumentalist, Gharana and style. Expression of 'nada' (sound) is more effective than 'bhava' (emotion). Where language is unable to express emotion the sound (nada) works effectively and properly. We can use musical theory in the best possible ways if we investigate all these elements minutely.

Conclusion

At last we came to the conclusion that some of the fields are still remained to research. As per changing social conditions and interest in music there is need of research like music for mental treatment, education, scientific research, impact of musical frequencies on human, Musical Psychology etc.

Supports of books can be the source of learning music but they have their own limitations so checking the self-experienced practical view and its result can be the renovation and aesthetic for artist to work directly.

REFERENCES

1. Sangeet Visharad by Lakshmi Narayan Gark
2. Sangeet Manual by Mrutyunjay Sharma
3. Art and Philosophy by S. K. Saxena
4. Encyclopedia Britannica Vol-2 & 12
5. Indian Music Literature by Mohamaed Harron

Introduction

India is known for its rich musical heritage around the globe. There are numerous forms and genres of music. Among which the most respected is classical Music. The music represents an exemplary standard and long established principle or style based on methods developed over a long period of time. It is derived in part from the elevation and wide dissemination of particular elite music within nations over the last century or more.

However the changing socio-economic realities with time, the spread and uptake of Indian classical music in the west for over half a century, and emerging critical voices among contemporary Indian students, new conditions and contexts have arisen that challenges a system essentially rooted in a court patronage environment. In the era of international integration, open world trade, advanced mean of communication, internationalized financial market and increased mobility of persons, good, capital data and idea almost every aspect of life is restructures. So the music is. Consequently the rapid technological up gradation in last one or two decades has given a new shape to the music in India. Some technological innovation that have influenced the classical music are –

a. Up gradation of recording/archiving technology
b. Virtual music classes
c. Online availability of music
d. Digitization of music/ musical instruments
e. Online shopping of musical instruments etc

The present paper will analyze the important changes/ challenges the music faced due to the above mentioned technological advancements along with other aspect in the process of its transition.

All cognitive significance hidden in music always gives energy to the universe. Every soul needs melody for salvation satisfaction. Just like one Shloka in Yadnyayalkasmuti

विणा वादन तत्वज्ञ, श्रुती जाती विशारद
तालज्ञाषच्य प्रयसेन, मोक्ष मार्गाच गच्चती

For an artist time always pass with new creative thought. That's why we have strong base of science in music. But it's time of change in realm of music with different kind of perspective.

Art is a creativity of human culture. Man has some natural tendencies about

28

Department of English and IQAC, Mungasaji Maharaj Mahavidyalaya, Darwha
In collaboration with
IQAC, SGBAU, Amravati, Department of English and IQAC, Jijamata Arts College, Darwha,
B.B.Arts, N.B.Commerce and B.P.Science College, Digras, Yashwantrao Chavan Arts and Science Mahavidyalaya, Mangrulpir
On the occasion of International Women's Day

CIHEWC 2023

CERTIFICATE

This is to certify that
Prof./Dr./Mr./Mrs./Ms. Pallavi S. Ambhore

has actively participated in One Day National Multidisciplinary Conference on "Current Issues In Higher Education & Women's Contribution" (CIHEWC-2023) held on Friday, 10th March 2023

He/She published, presented oral papers/an invited talk entilted, Women and Domestic Violence in Shashi Deshpande's novel The Dark Holds No Terror and Anita Desai's novel Fire on the Mountain Hence the certificate is issued.

Prof. S.A. Waghuley Director IQAC Sant Gadge Baba Amravati University, Amravati	Dr.V.B.Raut Principal Mungasaji Maharaj Mahavidyalaya, Darwha	Dr.A.P.Jadhao Principal Jijamata Arts College, Darwha	Dr.A.R.Ladole Principal B.B.Arts, N.B.Commerce and B.P.Science College, Digras	Dr. S.H.Kanherkar Principal Yashwantrao Chavan Arts and Science Mahavidyalaya, Mangrulpir

Scanned with CamScanner

ISSN 2454-1974

THE RUBRICS

e Journal of Interdisciplinary Studies

International, Peer Reviewed, Indexed

One Day National Multidisciplinary Conference On

Current Issues in Higher Education and Women's Contribution

10th March 2023

CIHEWC 2023

Conference Proceeding: Special Issue Editors

Ms.Priyanka Ruikar, Dr. Manoj Bhagat

Dr. Pritee Thakare, Dr. Shrikant Rasekar

Organized by

SGBAU Amravati University, Amravati

Mungasaji Maharaj Mahavidyalaya, Darwha

Jijamata Arts College, Darwha

B.B.Arts, N.B.Commerce and B.P.Science College, Digras

Yashwantrao Chavan Arts and Science Mahavidyalaya, Mangrulpir

Scanned with CamScanner

CONTENTS

PART A – ENGLISH LANGUAGE PAPERS

Sl.no.	Title and author	Page no.
1	Imparting Quality Education at UG Level in the Light of NAAC: A Solution | *Dr. Sandeep K. Thorat*	1
2	In Search of New Woman in *A Married Woman* And *Home* By Manju Kapur | *Dr. Sanjay L. Khandel, R. M. Sadanshiv*	5
3	A Study on the Factors Influencing Women Entrepreneurship in Buldhana District | *Dr. Rajesh P. Kitke*	9
4	Domestic Violence and its Effect on Women *Dr. Shyam R. Dutonde*	15
5	Library in Digital Era: Services, Opportunities and Challenges *Umesh J. Gawande*	22
6	Contribution of Women for the Empowerment of India *Dr. Madhuri Pravin Chikhalkar*	30
7	Experiences of Meena Alexander as A Societal Breakdown *Dr. Ganesh Pundlikrao Khandare, Prof. V.L. Khalatkar*	35
8	Contribution of Women in Physical Education and Sports *Dr. Kamini M. Mamarde*	38
9	Predicament of Women in Shobha De's *Starry Nights* *Mr. Pravin Sopan Shimbre*	42
10	The Participation of Women in Sports: Health and Development *Syed Anisoddin*	45
11	Women and Domestic Violence : *The Dark Holds No Terror* and *Fire on the Mountain* | *Dr. Pallavi S. Ambhore*	48
12	The Role of Higher Education for Women Empowerment *Dr. Syed Rameez Syed Waseem*	52
13	Role of Women in Agricultural Development *Dr. Kiran A More*	56

Scanned with CamScanner

THE RUBRICS JOURNAL OF INTERDISCIPLINARY STUDIES
International, Peer Reviewed, and Indexed e Journal

ISSN 2454-1974

THE RUBRICS
Journal of Interdisciplinary Studies
Volume 5 Issue 2 March 2023
www.therubrics.in

ROAD
CiteFactor

Women and Domestic Violence : *The Dark Holds No Terror* and *Fire on the Mountain*

Dr. Pallavi S. Ambhore
Associate Professor, Department of English Mahila Mahavidyalaya, Amravati.

FULL PAPER

Most of the Indian writers, especially women writers have presented the dominance of men over women through their writings. They are compelled to write such kind of literature as they witnessed it in the society, the outlook of men towards women. On the one hand, the society worships women deity and at the same time dominating them under the name of tradition and culture. We come across the challenges women have to face in their life, in the role of daughter, wife and mother. Therefore, the writers like Shashi Deshpande and Anita Desai raise the voice of women through their powerful weapon language.

The novel *The Dark Holds No Terror*, is the symbolic representation of women in India or around the globe who are not well treated and who are locked up inside the four walls of society's traditions and customs. Saritha, the protagonist in the novel needs a life with freedom and love in which she wants to be remembered till her last breath.

The novel, *Fire on the Mountain* conveys the message that running away from human contacts or one's kin is not a desirable proposition. In it we witness Nanda's fragile withdrawal, Raka's threat to her unfriendliness and the mysterious death of Ila Das at the same time fire which act as a kind of purification and bringing self-awareness. There is the search of female identity through these three women characters, Nanda, Raka and Ila.

Hypothesis

The present research works proposes to study the main women characters in the novels of *The Dark holds No Terror* and *Fire on the Mountain* by Shashi Deshpande and Anita Desai respectively. The common thing between these two characters i.e. Saru and Nanda is both are the victims of this patriarchal society or we can say male dominated society. The paper is about to study the common factors between these two characters which are very brilliantly explored by these the two prolific Indian women writers where they are presenting the real picture of the society.

Scanned with CamScanner

ISSN 2454-1974

Research Methodology

Since it is literary research, the methodology which could be applied to the proposed work shall be analytical, argumentative by referring primary and secondary sources. Library will be major source of information.

Shashi Deshpande and the novel *The Dark Holds No Terror*

Shashi Deshpande one of the most prominent writers in India successfully presented the real face of gender discrimination and the male domination over the female in the Indian society. The characters in her novels directly show the patriarchal norms, which stood against women. In the novels of Shashi Deshpande, women explain not only their history, various roles, their place in the society but their interpersonal relations also. In Deshpande's novels, the characters are the true victims of patriarchal system or the rules, which are being designed and implemented upon women by the male dominated society. Somewhere we cannot deny that Indian culture and its traditions prevent women from entering into social activities. As a writer, Deshpande breaks the barriers that are made by the society. In the present novel, *The Dark Holds No Terror*, the protagonist, Saru, marries with Manohar against her parents' will. She goes on to become a successful doctor, but her success as a doctor disturbed her marital life. The novel also challenges to show the revolt against the complication and complexities of women like Saru, the protagonist. Saru's marriage created big problems in the house. She got married to the man she loved, who is from different caste and religion. After Saru marries Manohar and when she introduces Manu in her home, Saru's mother asks her:

> What caste is he? I do not know. A Brahmin? Of course, not. Then, cruelly, his father keeps a cycle shop. Oh, so, they are low caste people, are they? TDHNT (p.96)

The character, Saru dreamed of a life where she could live a life with her loved ones. To live the life she had to leave their parents behind. She always worked hard to straighten her life and survive her needs with money. One day saru goes for interview with Manohar and the interviewer asked Manu: "How does it feel when your wife earns not only the butter but most of the bread as well?" TDHNT (p.35–36)

This question disturbs Manu's mind and hurts to his ego and complexity. Saru tried a lot to explain her husband regarding this and she was so unhappy with him. One mpore incident happened with saru and Manu, when Saru and Manu meets Manu's colleague. Both of them were going for holiday trip so wanted to do shopping. There they accidentally meet Manu's colleague. After seeing both of them, Wife of Manu's colleague says: "If you had married a doctor", the wife said tartly, "you would have gone to Ooty too… London, Paris, Rome, Geneva". TDHNT (p,111)

Both these two incidents affected Manu deeply. Not only affected but created ego and complexity in his mind because he was feeling so bad and so small in front of his friends. The reason behind this was just because his wife was a doctor and she earned a lot more

Scanned with CamScanner

ISSN 2454-1974

than him. The mental exploitation was not only from her husband's side, but even her mother also tortures her by blaming that she is responsible for her brother's death. Saru was so helpless that could not prove her innocence in front of her parents. When Saru was young, her brother died drowning and the cause of his death was put on her. Saru at that time tried her best to save him. But still, all her life, she was criticized and blamed by her mother... Saru's mother says: "You killed him. Why did not you die? Why are you alive, when he is dead?" (TDHNT p.173) From the above incidents which happened in Saru's life are common in the life of any Indian woman and the reason behind this is Indian culture and its traditions avert women from entering into social activities. As a writer, Deshpande breaks the barriers that are made by the society.

Anita Desai and *Fire on the Mountain*

Anita Desai marks a revolutionary departure without trespassing into terra incognita and is happy to have women protagonists in her novels. Her all-young characters crave women's liberty. The recurring themes of Anita Desai's novels are identified woman's struggle for self-realization and self-definition, woman's quest for self-identity, her pursuit of freedom, equality and transcendence, her rebellion and protest against oppression at every level.

In the novel *Fire on the Mountain*, Nanda Kaul is the wife of an Ex- Vice Chancellor. She played her role with grace and dignity that almost everybody envied her. But her married life was not happy. Nanda Kaul was not happy with her husband. She led her life as he wanted her to lie, out of a sense of duty. Her life as the vice Chancellor's wife though crowded full of social activities, was essentially meaningless and unsatisfying. Though there had been too many guests coming and going all the time, she was feeling very lonely in the house. Her husband also did not love her as a wife. He treated as some decorative yet useful mechanical appliance needed for the capable running of his household. She was just like a gracious hostess all the time and pretending that she was enjoying the comforts and social status of the wife of a dignitary. But she felt lonely and neglected. Her husband had a lifelong affair with Miss David, the Mathematics mistress. This had been a source of suffering throughout her life.

After the death of her husband, Nanda leaves the vice Chancellor's house and comes over to Kasuali. She always thinks that she is just like a lonely pine tree. The novelist shows the garden of Carignano is a projection of Nanda Kaul's yearning for loneliness and privacy. The novel deals with the subject of solitude, existentialism and oppression of females in the Indian patriarchal culture. Nanda never says this to Raka, but she slowly begins to learn for a connection with her great grandchild. Ila Das and Nanda Kaul represent involvement in and detachment from the emptiness and meaninglessness of life. When police officer gives Nanada Kaul the news of Ila Das's tragic death, she is stunned and shocked. She always tries to confront the horrible death of Ila Das so that she must bridge the gap between the disgusting reality and the illusion of noble life, which she was facing. Thus, when Raka returns home, setting fire to the forest, she finds

Scanned with CamScanner

ISSN 2454-1974

her sitting. She finds that Nanda dies on the stool with her head hanging and at her back telephone was hanging with the long wire. Raka is not interested in human connections, but grows to trust her great grandmother as the book progresses. Raka's act of setting fire to the forest is a symbol of her inward revolt against the cruelty and violence present in our society. Here the novelist symbolizes Raka as of the new generation, just like a fire on the mountain. It is the superbly crafted novel, in which we can witness the beautiful mingling of rich, symbolic imagery and psychological insights. In addition to existentialistic reality of life the novelist evokes the sentiment and sensibility of women for their role and respect in society. Nanda's feeling of identification with pine trees suggests her withdrawal from life as most of the Indian women feel in their lives.

Conclusion

The life of characters reflects the life of Indian women or girls who are ignored and not allowed to actively participate in the society. The customs and so-called culture of the society hold back the women from coming forward and they were enslaved inside the four walls of the kitchen. But society should change its outlook towards women and should think that women are not someone to be held back, just like men, they do have skills and abilities that can contribute to the society. Shashi Deshpande and Anita Desai in *The Dark Holds No Terror* and *Fire on the Mountain* respectively tried to show real situation of women though the characters of Saru and Nanda. Though both of them had all the material pleasure, they were not satisfied with their lives. Through these novels both the writers raised the voice of women through their prolific writings.

References

Anita Desai, Fire on the Mountain, William Heinemann, London, 1977.

Alcock, Peter, "Rope, Serpent, Fire: Recent Fiction of Anita Desai" In The Journal of Indian Writing in English, Vol.9, No.1, Jan.,1981,ed.by Blaram Gupta, Gulbarga.

Beauvoir, S. d. (1988). The Second Sex (Picader Classics Edition) London: Pan Books Ltd.335.

Beauvoir, S. d. (2004). Quoted in M. H. Abrams' A Glossary of Literary Terms. Bangalore: Eastern Press.4.

Deshpande, S. (1990). The Dark Holds No Terrors. New Delhi: Penguin Books. Subsequent page references from this edition are parenthesized within the text.

Deshpande, S. (1987, December). A Woman's World. All the Way. 12. (V. Viswanatha, Interviewer) Literature Alive.

Foucault, Michel, The History of Sexuality: An Introduction, translated by Robert Hurley, New York: Pantheon, 1978, p.93.

Sharma R.S. Anita Desai: Arnold Heinemann, New Delhi, 1981, p.118.

Scanned with CamScanner

अनहद बाजे री

सम्पादक
डॉ. मधु रानी शुक्ला
सह-सम्पादक
शाम्भवी शुक्ला

Scanned with OKEN Scanner

कनिष्क पब्लिशिंग हाउस
4695/5-21 ए, अंसारी रोड, दरियागंज
नई दिल्ली-110 002
फोनः 2327 0497, 2328 8285
फैक्स : 011-2328 8285
E-mail: kanishka_publishing@yahoo.co.in

अनहद बाजे री
प्रथम संस्करण–2022
© सम्पादक
ISBN: 978-93-93322-06-7

भारत में मुद्रित
कनिष्क पब्लिशिंग हाउस, 04695/5-21 ए, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-110 002 से चैतन्य सचदेवा द्वारा प्रकाशित; क्वालिटी प्रिंटर्स, दिल्ली द्वारा शब्द-संयोजन तथा नाइस प्रिंटिंग प्रेस, दिल्ली द्वारा मुद्रित।

Scanned with OKEN Scanner

अनुक्रमणिका

सम्पादकीय — *v*

1. कबीर — 1
   पं. विजय शंकर मिश्र
2. कबीर, चलचित्र और संगीत — 7
   प्रो. लावण्य कीर्ति सिंह 'काव्या'
3. यों कबीर बन जाना आसान नहीं! — 14
   शशिप्रभा तिवारी
4. लोक की परिधि में कबीर–काव्य — 22
   डॉ. अरविन्द कुमार
5. मानव–जीवन एवं कबीर की साखी — 31
   डॉ. जया शर्मा
6. कबीर और रहस्यवाद — 37
   डॉ. संगीता घोष
7. Spiritual Contemplation in the Poetry of Saint Kabir — 46
   Prof. Dr. Sharmila A. Deshmukh
8. Sagun and Nirgun Bhakti Marg–
   A Comparison — 53
   Prof. Amruta Sharad Ashtikar and Dr. Snehashish Das

Scanned with OKEN Scanner

36. कबीर और निर्गुण परम्परा 254
बलबीर प्रसाद

37. Ethos of Bhagat Kabir Ji 260
Aditi Singla

38. कबीर के पदों का सांगीतिक विश्लेषण
(वाग्गेयकार पं. कुमार गंधर्व की दृष्टि में संत कबीर) 270
अलका सिंह एवं डॉ. ज्योति मिश्रा

39. हिंदुस्तान के विभिन्न विश्वविद्यालयों में प्रस्तुत किए गए संत कबीर जी से संबंधित विभिन्न शोध कार्यः एक अध्ययन 276
हरविंदर बीर कौर

40. संत कबीरः जीवन, वाणी–रचना और उद्देश्य
(श्री गुरु ग्रंथ साहिब के विशेष संदर्भ में) 285
जसप्रीत सिंह

41. कबीर के गेय पदों का सांगीतिक विश्लेषण 294
कु. कांचन भा. सोळंके एवं डॉ. स्नेहाशिश ज. दास

42. श्री गुरु ग्रंथ साहिब में भक्त वाणी कबीर जी के विशेष संदर्भ में 301
नरेन्द्रपाल सिंह

43. संत कबीर और संगीत 308
प्रो. (डॉ.) नीरा चौधुरी एवं रूमा चक्रवर्ती

44. अवध क्षेत्र में कबीर के पदों का सांगीतिक विश्लेषण 315
डॉ. रामशंकर एवं अशोक कुमार

45. भक्त कबीर जी रचित साहित्य का रागात्मक अध्ययन 323
सुखवीर कौर

46. कबीर की निर्गुणोपासना में भक्ति भावना का सामाजिक प्रभाव 332
विनय कुमार पाठक

47. कबीर के पदों का सांगीतिक विश्लेषण 338
प्रियंका गुप्ता

लेखक परिचय 342

Scanned with OKEN Scanner

7

Spiritual Contemplation in the Poetry of Saint Kabir

Prof. Dr. Sharmila A. Deshmukh

Kabir Das was not only a great revolutionary saint but also a born poet. Though he didn't go to any school, he had the ability to express himself in a unique way. There is no possibility of a clearer and louder language than Kabir's language. It is a reflection of his philosophy about life. His writings were mainly based on the concept of reincarnation and karma. He was a strong believer in the concept of oneness of God. He had a special message that whether you chant the name of a Hindu God or a Muslim God, the truth is that there is only one God above, who is the creator of this beautiful world. He gave a universal path for salvation which could be followed by people of any religion on the earth.

This research paper presents a review of the perspective of Saint Kabir on various aspects of human life.

Introduction

"Kabira khada bazaar me mange sabki khair,
Na kahu se dosti, na kahu se bair.."
"Kabir kabir kya kahat phire ho,
Ja jamuna ke teer ..
Ek ek gopi ke prem me bahagaye Koti Kabir .."
"Man lago yaar Fakiri me..."

Scanned with OKEN Scanner

(The human life is very precious and you will never get this body again, as a leaf when fallen down from a tree never gets attached to it again.)

Humanity

Kabir gave the highest importance to humanity. He spent his whole life in preaching that humanity is the greatest religion.

He always preached people to be compassionate towards all the living beings. He opposed the people for spreading hatred and violence in the name of religion. He says one should not hurt others by words. Kabir always said that ego is the biggest enemy of a man and it causes a great loss to him. This ego does not allow man to surrender at the lotus feet of God. Even God do not like the people with ego. Therefore Kabir repeatedly taught people to give up ego and to be sensitive to others. He says,

"Akhir ye tan Khaak milega, kyu firta magruri me"
"aisee vani boliye, man ka aapa khoy
Auran ko sheetal kare, aaphu sheetal hoy"

(Give up ego and speak softly with others so that everyone will be happy.)

He said that to kill the animals and eat them is the greatest sin. He says,

"Jiva mat maro bapura, sab me ek hi pran."

(Do not kill the innocent animals, because all living beings are having the same soul.)

Law of Karma (Action)

Kabir's philosophy is parallel to the Indian Vaidik philosophy. Kabir firmly believes in the law of karma. He told people to be aware of their actions for, as you sow, so shall you reap.

He says,

"Kare burai sukh chahe, kaise pave koy
Rope ped babool ka, Aam kaha se hoy"

(If one expects happiness by doing bad deeds, it is not possible. If acacia tree is planted, one cannot hope for a mango fruit.)

Khoji hoy turat mil jau, ek pal ki talaash me
Kahat Kabira suno bhai sadho, mai to hu vishwas me..”

(Where do you search for me? I am there within you. I am neither in pilgrims nor in statues..

Neither in spiritual actions nor in yog-renunciation. I am in faith and within you. If you search me there, you will find me immediately.)

Kabir has stated the peculiar importance of love in devotion. He says,

“Prem bina jo bhakti hai, so nij dambha vichar
Udar bharan ke karan, janma gavaye saar”

(Bhakti without love is self-conceit. Man lives only to fill his stomach, hence his life has lost the true essence.)

When there is no love in mind, then bhakti is just a scene. There is no thought in it, it is just extravagance, which is done selfishly for subsistence. Bhakti with love can only be fruitful. In his writings, Kabir consulted well on the practice of hypocrisy under the name of religion at that time. Kabir says that in order to attain true asceticism, one’s thoughts and conduct must be pure. He says,

“Tan ko jogi sab kare, man ko kare n koy
Sahajai sab siddhi paiye, jo man jogi hoy”

(Everyone becomes bairagi (recluse) by body only but no one makes the mind bairagi. The one works on the mind, easily gets all the ‘siddhis’ (miraculous powers).)

Impermanence of Life

Kabir asserted the evanescence of human life. He says that we don’t know when we are going to leave this world, so one should not waste their time and perform one’s duty and perform Bhakti.

He says,

“Raat gawai soy ke, divas gawaya khay
Hira janma anmol tha, kaudi badle jay”

(O man! You wasted the night in sleeping and the day in eating. Your life was as precious as diamond but you made it like a stone, having no value.)

“ Durlabha manush janma hai, dehana barambar
Taruwar jyo patta zade, bahuri na lage daar”

Scanned with OKEN Scanner

(The human life is very precious and you will never get this body again, as a leaf when fallen down from a tree never gets attached to it again.)

Humanity

Kabir gave the highest importance to humanity. He spent his whole life in preaching that humanity is the greatest religion.

He always preached people to be compassionate towards all the living beings. He opposed the people for spreading hatred and violence in the name of religion. He says one should not hurt others by words. Kabir always said that ego is the biggest enemy of a man and it causes a great loss to him. This ego does not allow man to surrender at the lotus feet of God. Even God do not like the people with ego. Therefore Kabir repeatedly taught people to give up ego and to be sensitive to others. He says,

"Akhir ye tan Khaak milega, kyu firta magruri me"
"aisee vani boliye, man ka aapa khoy
Auran ko sheetal kare, aaphu sheetal hoy"

(Give up ego and speak softly with others so that everyone will be happy.)

He said that to kill the animals and eat them is the greatest sin. He says,

"Jiva mat maro bapura, sab me ek hi pran."

(Do not kill the innocent animals, because all living beings are having the same soul.)

Law of Karma (Action)

Kabir's philosophy is parallel to the Indian Vaidik philosophy. Kabir firmly believes in the law of karma. He told people to be aware of their actions for, as you sow, so shall you reap.

He says,

"Kare burai sukh chahe, kaise pave koy
Rope ped babool ka, Aam kaha se hoy"

(If one expects happiness by doing bad deeds, it is not possible. If an acacia tree is planted, one cannot hope for a mango fruit.)

Scanned with OKEN Scanner

Guru's (Mentor) Place in Human Life

Guru's place in human life was very important from Kabira's point of view.

In this universe, only a human being can improve his future by being motivated to do good deeds. But this is possible only when he acquires knowledge from the Sadguru in life. Kabirdas says that it is not possible to get welfare without getting knowledge from a spiritual guru. When man acquires the knowledge of the self, he begins to experience apathy in the materialistic world. Explaining the importance of spiritual guru, Kabirdas says,

"Guru mahima gavat sada, man rakheati mod
So bhav fir ave nahi, baithe prabhu ki goad."

The person who worships the guru, will not come again in this miserable world. He sits happily on the lap of the Lord. Those who live happily singing and praising the virtues of the Guru, are liberated from the world and attain the true form of God, that is, they attain salvation. He says that without Guru, the disorder in the inner human being will not disappear. Even if thousands of suns and moons rise in this universe, they will not be able to eradicate the pernicious darkness in human beings. Only external light can be obtained from them, but only the Guru can eradicate the ignorance and disorder of human beings. Kabirdas says,

"Kotin chanda ugahi, suraj koti hajar
Timir to nase nahi, bin Guru ghor andhar."

He further says that even though the true Guru seems to be treating the disciple harshly, he is actually working to make that disciple.

"Guru Kumhar Shishya Kumbh hai, gadhi gadhi Kadhe Khot.
Antar hath sahay de, bahar bahe chot."

(The difference is that the hand supports the outside arm.)

Here Kabirdas uses analogy between the Guru and a potter and the disciple to a pot. Just as a potter leans his hand lightly on the inside and shapes it hard on the outside to make it better, so too the Guru loves his disciple very much and makes him disciplined and wise.

He was adamant that without the grace of the Guru, human life is incomplete.

Guru shows his disciples the path of Bhakti which leads them to the Almighty. Therefore every one should surrender himself at the feet of Sadguru.

Scanned with OKEN Scanner

Kabir says,

"Guru Govind dou khade, kake lagu paay
Balihari Guru apno, Govind diyo batai"

(Guru and God both came in front of me, Whom should I worship first? Kabir says I should first bow down before the Guru, with whose bliss Imet the God.)

Remembrance of God

Like all other saints, Kabir also puts emphasis on remembrance of God. He says that one should never forget God in any situation. He says,

"Dukh me sab sumiran kare, sukh me kare n koy
Jo sukh me sumiran kare to dukh kahe ko hoy"
"Sukh me sumiran na kiya, dukh me kiya yaad
Vaha Kabir ta daaski, kaun sune fariyaad"

(When man falls in misery he remembers God. But if he remembers God in favourable situation, by grace of God he will never become sad. God listens to those only who remains neutral in any situation and remember God.)

"Saanssaans per naam le, Vritha Saans mat khoi
Na jane iss saanska, phir aawan hoi na hoi"

Kabir says we don't know when we will take our last breath, therefore we should not waste a single breath and take the name of God.

Conclusion

Kabir was a revolutionary saint with independent thoughts. He criticized the evils of all religions and bad customs in the society. His Bhakti movement proved most fruitful and brought a positive change in the minds of people. He advised people to give up hatred and spread love to all. He devoted his whole life for the well-being and upliftment of the poor, downtrodden people in the society. He preached that love was the only medium that could bind the entire community in an unbreakable bond of fraternity. He made people realize the real meaning of spirituality. Kabir's preaching of humanity, morality and spirituality through his poetry will keep uplifting the human conscious forever.

Scanned with OKEN Scanner

REFERENCES

1. https://en.wikipedia.org/wiki/Kabir
2. http://indianculture.gov.in/stories/life-sant-kabir-das
3. https://hindi.webdunia.com/hindi-poems/kabir-dohe-120060500058_1.html
4. https://www.varanasi.org.in/kabir-das
5. https://scholar.google.co.in/scholar?q=kabir+research+article&hl=en&as_ sdt=0&as_vis=1&oi=scholart

Scanned with OKEN Scanner